समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक
संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

**1 अगस्त 2022**
वर्ष : 35, अंक : 03
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 जुलाई 2022
वार्षिक चंदा : ₹60/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-
प्रति अंक : ₹ 3/-

नारी सशक्तीकरण वर्ष

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

# धनवान बनने में जीवन न गंवाएँ, परिवार को सुसंस्कृत भी बनाएँ

## समुन्नत परिवारों में ही व्यक्तित्व निखरता है, ऐसे परिवारों से बना समाज ही सुखी और सम्पन्न होता है।

### यह उपेक्षा क्यों?

परिवार व्यक्ति और समाज की मध्यवर्ती कड़ी है। व्यावहारिक जीवन में यह शरीर के हृदय की तरह है। जैसे हृदय शरीर के ऊपरी भाग मस्तिष्क, मुख एवं चेहरे के साथ जुड़ी हुई इन्द्रियों को पोषण प्रदान करता है, वैसे ही वह नीचे के हिस्से में धड़ से जुड़े हुए अंग-अवयवों को भी पोषण देता है। परिवार की भी व्यक्ति और समाज के साथ यही भूमिका है। परिवार अपने प्रत्येक सदस्य को परिष्कृत, परिपुष्ट बनाता है, साथ ही समाज को समुन्नत, सभ्य, समर्थ बनाने का कार्य भी करता है। इसे धड़ के हाथ-पैरों की सुरक्षा, सुव्यवस्था के समतुल्य समझा जा सकता है। इतना महत्वपूर्ण स्थान होते हुए भी आश्चर्य है कि परिवार को समग्र रूप से समुन्नत बनाने में न्यूनतम ध्यान दिया जाता है।

घर के कमाऊ व्यक्ति गृहपति का स्थान ग्रहण करते हैं। परिवार को सुखी-समुन्नत बनाने के लिए वे आर्थिक साधनों से ही प्रयत्नरत रहते हैं। उनके द्वारा अच्छा भोजन, अच्छे वस्त्र, मनोरंजन के उपकरणों का बाहुल्य, महँगी पढ़ाई का प्रबन्ध, ठाठ-बाट, शान-शौकत, खर्चीली शादियाँ आदि की योजनायें बनती और कार्यान्वित होती रहती हैं। इसी आधार पर उन्हें वरीयता मिलती है।

### सम्पन्नता नहीं, सुव्यवस्था जरूरी

धन भी जीवन-निर्वाह की एक सर्वविदित आवश्यकता है, पर वह उतनी बड़ी नहीं है, जिसके उन्माद में प्रगति की अन्यान्य आवश्यकताओं को पूरी तरह भुला दिया जाए। समग्र विकास ही वास्तविक विकास माना जाता है। यदि शरीर का एक अंग बहुत मोटा, बहुत फूला बन जाए, तो उपलब्धि नहीं वरन् बीमारी ही कहा जाएगा। इसी प्रकार परिवार की अर्थव्यवस्था तो ठीक हो, किन्तु सदस्यों का स्वास्थ्य, स्वभाव, चिन्तन-चरित्र लड़खड़ाने लगे और वे दुष्प्रवृत्तियों, दुर्व्यसनों के चंगुल में फँसते जायें, तो समझना चाहिए कि संकटों के, विग्रहों के बादल घिरने में देर नहीं। ऐसी दशा में आर्थिक सम्पन्नता उन दुर्गुणों की वृद्धि में सहायक होगी। आग में तेल पड़ने की तरह वह भड़कने ही लगेगी।

इससे तो वे गरीब नफे में रहते हैं, जो रोज कमाते और रोज खाते हैं। उनके पास न वक्त खाली रहता है और न फिजूलखर्ची की सुविधा। यह स्थिति सम्पन्न समुदाय में उपहासास्पद भले ही हो, पर जीवन के स्वस्थ विकास का, कुमार्ग न अपना पाने का सुयोग-सौभाग्य तो उन्हें मिलता ही है।

परिवार के संचालक उत्तरदायी सदस्यों को दृष्टिकोण में विशालता और समग्रता रखनी चाहिए। उन्हें बारीकी से देखना चाहिए कि उनका श्रम, समय, कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व परिजनों के लिए अर्थ-साधन जुटाने में ही तो समाप्त नहीं हो रहा है। यदि ऐसा ही है, तो उन्हें अपनी भूल माननी चाहिए और विचार करना चाहिए कि जीवन विकास के लिए जिन अन्य तथ्यों की आवश्यकता है, उनकी ओर ध्यान दिया जा रहा है कि नहीं? उनके सम्बन्ध में सतत प्रयत्नशील रहा जा रहा है कि नहीं?

निर्वाह साधनों की तरह स्वास्थ्य को भी वास्तविक और आधारभूत सम्पदा माना जाना चाहिए। ध्यान रहे कि इस लक्ष्य की प्राप्ति बहुमूल्य स्वादिष्ट व्यंजनों या पौष्टिक दवाओं के सहारे नहीं हो सकती। इस हेतु प्रकृति का अनुसरण करना पड़ेगा एवं इन्द्रिय संयम बरतना पड़ेगा। इसके लिए आहार में ही नहीं, विहार में भी समग्र संयम का समावेश करना पड़ेगा।

अधिकांश लोग आवश्यकता से अधिक मात्रा में अभक्ष्य पदार्थों का समय-कुसमय चर्वण करते रहते हैं। यह भूल तो देखने में तनिक-सी प्रतीत होती है, पर वास्तव में दुर्बलता, रुग्णता और अकाल मृत्यु का वही मूलभूत कारण है। रसोईघर में क्या बने, किस प्रकार बने और उसे कौन कितनी मात्रा में, किस प्रकार खाये, इसकी सुव्यवस्था बनाने की आवश्यकता होती है। आहार, श्रम और दिनचर्या में सुव्यवस्था का नियमन एक ऐसा सिद्धान्त है, जिसका ठीक तरह परिपालन करते रहने पर स्वस्थ रहने की गारण्टी मिल जाती है। स्वास्थ्य संरक्षण के लिए नियम-अनुशासनों को अपनाने से दिनचर्या भी सुव्यवस्थित हो जाती है, जिससे जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रगति का पथ प्रशस्त होता है।

### कल्पनाएँ, जो सच नहीं होतीं

अभिभावक उचित-अनुचित तरीकों से अपनी, परिवार की सम्पन्नता बढ़ाने में जुटे रहते हैं। इसी में वे वर्तमान तथा भविष्य के सुख-शान्ति से भरापूरा होने की कल्पना करते रहते हैं। पर परिणाम होता इससे ठीक विपरीत ही है। साधन-सम्पदा के बदले व्यसन और दुर्गुणों का पिटारा पल्ले पड़ता है। सम्पदा के बदले खरीदे गये दुर्गुण जीवन के साथ जोंक की तरह चिपक जाते हैं और खून पीते रहते हैं। उनके रहते न किसी की सभ्य समाज में गणना होती है, न प्रामाणिकता और विश्वसनीयता हाथ लगती है। इस अभाव में किसी का सच्चा सहयोग

एवं सद्भाव भी हाथ नहीं लग पाता। प्रगति के अवसर सामने तो आते हैं, पर उन्हें उत्साहपूर्वक अपनाये न जाने पर वापस लौट जाते हैं।

सम्पन्नता विलासिता सिखाती है, आलसी, प्रमादी और अहंकारी बनाती है। इस यथार्थता को न समझ पाने वाले ही यह सोचते रहते हैं कि धन-वैभव ही सब कुछ है। उसकी बड़ी मात्रा हाथ लगने पर उसके बदले सुख-सुविधा के प्रचुर साधन कमाये जा सकते हैं। यह मान्यता अनुभव की कसौटी पर खोटे सिक्के की तरह निरर्थक सिद्ध होती है।

### सच्ची सम्पदा सद्गुण और संस्कार

होना यह चाहिए कि परिवार को सुसम्पन्न बनाने के लिए जितना प्रयत्न किया जाता है, उतना ही प्रयत्न उसे सुसंस्कृत, सद्गुणी बनाने के लिए किया जाए, क्योंकि यही सम्पदा है जो जीवन भर साथ देती है। यही कठिनाइयों का बोझ उतारती और प्रगति का पथ प्रशस्त करती है। सद्गुणी अपनों के बीच ही नहीं, परायों के बीच भी सम्मान और सहयोग प्राप्त करता है। उसके कारण व्यक्तित्व का वजन बढ़ता है। यही वह आधार है, जिसके कारण जनसाधारण का स्नेह, सहयोग और सद्भाव पाया जाता है। जिसके पास यह उच्चस्तरीय पूँजी है, उसे निर्वाह के स्वल्प साधन रहते हुए भी आत्मसंतोष एवं लोकसम्मान की कमी नहीं रहती। जो इतना अर्जित कर सका, उसे सामान्य सुविधाओं के रहते भी ऐसा अनुभव नहीं होता कि वह दरिद्र है। दूसरे सुसम्पन्नों की तुलना में उसे कम प्रसन्नता मिल रही है।

परिवार को सुसम्पन्न बनाने के व्यापक प्रचलन में हेर-फेर होना चाहिए। सोचा जाना चाहिए कि इस ललक को अतिशय मात्रा में पालने का दुष्परिणाम ही सामने आकर रहेगा। अस्तु, हितैषी होने का दावा करते हुए भी वस्तुतः परिजनों के अनहित का सरंजाम नहीं जुटाना चाहिए। जितना निर्वाह के लिए नितान्त आवश्यक है, उतना ही कमाया जाए, ताकि किसी को पूर्वजों की कमाई पर गुलछर्रे उड़ाने, बैठे-ठाले दिन काटने की ललक न उठे।

परिवार के हर सदस्य को यह सोचने देना चाहिए कि उसे अपने पैरों पर खड़ा होना है, स्वावलम्बी बनना है। सद्गुणों की पूँजी ही आरम्भ से अन्त तक काम देती रही है। उसी के सहारे अपने को समर्थ, सुयोग्य और प्रामाणिक, सम्मानित बनने का अवसर मिलता रहा है। यही है वह अवलम्बन, जिसने मनुष्य को आगे बढ़ाया, ऊँचा उठाया है। इस सम्पदा की महत्ता से परिवार का ध्यान हटा देना उन्हें भी भ्रमजंजाल में फँसा देने के बराबर है।

### समय रहते ही बदलना होगा

विलासिता मनुष्य को स्वप्नदर्शी बनाती है। सम्पन्न व्यक्ति वर्तमान की तरह भविष्य को भी सदा सुख-सुविधाओं से भरापूरा रहने की आशा करता रहता है, जबकि सही बात यह है कि प्रतिकूलता की हवा बहने लगने पर वह ताश का बना काल्पनिक महल देखते-देखते धराशायी हो जाता है। तब तक समय निकल चुका होता है और नये सिरे से उन सद्गुणों की सम्पदा अर्जित कर सकना कठिन हो जाता है, जिनके आधार पर वह सँभल सके।

शिल्प, संगीत, साहित्य, कला-कौशल अर्जित करने के लिए जिस प्रकार दीर्घकालीन और अनवरत अभ्यास करना पड़ता है, उसी प्रकार सद्गुणों को स्वभाव का अंग बनाने के लिए, उन्हें दैनिक जीवन में भरपूर स्थान देने के लिए प्रयत्नरत रहना पड़ता है। आदतें देर में पकती हैं। वे हथेली पर सरसों जमाने की तरह न तो तुर्त-फुर्त उपलब्ध होते हैं और न जमी हुई आदतों से पीछा छुड़ाना जल्दी से सम्भव हो पाता है। उन्हें योजनाबद्ध रूप से अपनाना और क्रमबद्ध रूप से व्यवहार में उतारना पड़ता है। परिवार के वरिष्ठों का ध्यान इसी केन्द्र पर केन्द्रित रहना चाहिए और उन्हें अपने परिजनों को सुसंस्कारी बनाने के लिए परिपूर्ण सतर्कता के साथ अनवरत प्रयत्न करना चाहिए। इस कार्य में अपना समय और परिश्रम लगाने में कृपणता नहीं बरतनी चाहिए।

वाङ्मय खण्ड 48 (समाज का मेरुदण्ड सशक्त परिवार तंत्र), पृष्ठ 2.21-2.23 से संकलित-सम्पादित

# समय की माँग है कि हर मण्डल अधिक सक्रिय हो, नए मण्डल गठित हों

## युगऋषि के प्रत्येक अनुयायी, शिष्य, साधक, श्रद्धालु, समर्थक को किसी न किसी मण्डल का सक्रिय सदस्य होना ही चाहिए

### दायित्वों का पुनर्बोध

हम सब भलीभाँति जानते हैं कि परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी अवतार परम्परा के अन्तर्गत 'युग परिवर्तन' के लिए इस धरती पर अवतरित हुए। उनके द्वारा विनिर्मित युग निर्माण योजना, दुनिया का भाग्य और भविष्य बदलने वाली एक दैवीय योजना है। इसके प्रति आस्थावान प्रत्येक युग सेनानी योजना की सूत्र-संचालक दिव्य चेतना से अनुप्राणित है। परम पूज्य गुरुदेव ने ऐसे देवमानवों को अपना 'अंग-अवयव' माना है। वे उन्हें एक अंश का प्रज्ञावतार बताते रहे हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता कहती है कि श्रीभगवान का अवतरण अधर्म के नाश और धर्म की स्थापना के लिए हुआ करता है। 'प्रज्ञावतार' के रूप में भी आज वही शाश्वत सत्य दोहराया जा रहा है। इन दिनों युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की युग निर्माण योजना '**मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण**' के लक्ष्य के साथ सक्रिय है। एक ईश्वरीय प्रवाह समाज में व्याप्त अधर्म, अन्याय, अशान्ति, अत्याचार का शमन कर सत्य, प्रेम, न्याय, शान्ति, सद्भावना की स्थापना के लिए सक्रिय है। अवतारी चेतना ने हर बार अवांछनीयताओं को मिटाने के लिए देवात्माओं को संगठित और सक्रिय किया है। सौभाग्य से इस बार युग निर्माण योजना के लिए समर्पित हम सबको यह अवसर मिला है। यदि इस दुर्लभ सौभाग्य को पहचान कर हम सांसारिक बंधनों को ढीला करते हुए भगवान के साथ साझेदारी करने का साहस जुटा सकें तो जीवन धन्य हो जाएगा।

### प्रज्ञावतार की कार्ययोजना

परम पूज्य गुरुदेव लिखते हैं,*''युग निर्माण योजना कागजी या कल्पनात्मक नहीं है। वह समय की पुकार, जनमानस की गुहार और दैवी इच्छा की प्रक्रिया है। इसे साकार होना ही है।''* वाङ्मय क्रमांक-66, पृष्ठ 3.50

इन पंक्तियों से ठीक पहले उन्होंने अवांछनीयताओं के निराकरण के लिए संगठन की आवश्यकता बताई है। वे लिखते हैं, *''सामाजिक बुराइयों, कुरीतियों, अनैतिकताओं में से अधिकांश ऐसी हैं, जिनका उन्मूलन और उनके स्थान पर स्वस्थ परम्पराओं की स्थापना संगठित प्रयत्नों से ही सम्भव हो सकेगी। जुआ, चोरी, रिश्वतखोरी, मिलावट, बेईमानी, व्यसन, व्यभिचार, दहेज, मृत्युभोज, नशेबाजी, माँसाहार, पर्दा, बाल-विवाह, अनमेल विवाह, उच्छृंखलता, गुण्डागर्दी, फैशन, फिजूलखर्ची आदि अगणित बुराइयाँ ऐसी हैं जो अपने समाज में गहरी जड़ जमा चुकी हैं। इनका विरोध करने को एक व्यक्ति खड़ा होगा तो पिस जाएगा, किन्तु यदि संगठित प्रतिरोध करने का और इनके स्थान पर आदर्श परम्पराओं के अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करने का प्रचलन बढ़ेगा तो सभ्य समाज की स्थापना का स्वप्न सार्थक होकर ही रहेगा।''*

गायत्री परिजनों का दायित्व क्या है? यदि यह समझना हो तो प्रज्ञापुराण भाग-1 से समझा जा सकता है। प्रज्ञापुराण के प्रथमोध्याय-लोकजिज्ञासा प्रकरण में भगवान् देवर्षि नारद जी को बताते हैं:- *''इन दिनों सर्वत्र अनास्था का दौर है। अदूरदर्शिताग्रस्त हो जाने से लोग मानवी गरिमा को भूल गए हैं। अचिन्त्य चिन्तन और अनुपयुक्त आचरण में संलग्न हो रहे हैं, फलतः रोग, शोक, कलह, भय और विनाश का वातावरण बन रहा है। विभीषिकाएँ निरन्तर धरती के अस्तित्व तक को चुनौती दे रही हैं।''* (18-20)

*''मनुष्य की वरिष्ठता श्रद्धा, प्रज्ञा और निष्ठा पर अवलम्बित है। इन्हीं की न्यूनाधिकता से उसका व्यक्तित्व उठता-गिरता है। ... इन दिनों मनुष्यों ने आंतरिक वरिष्ठता गँवा दी है। फलतः अपने तथा सबके लिए संकट उत्पन्न कर रहे हैं।''* (24-26)

यह तो हुआ इस युग की पतनोन्मुख गतिविधियों का कारण। अब इनके समाधान के संदर्भ में भगवान् कहते हैं :-*''निराकार होने के कारण मैं प्रेरणा ही भर सकता हूँ। गतिविधियों के लिए शरीरधारियों का आश्रय लेना पड़ता है, इसके लिए वरिष्ठ आत्माएँ चाहिए, जो अपने प्रभाव, वर्चस्व से समूचे समुदाय की दिशा बदल सकें, समूचे वातावरण में परिवर्तन ला सकें।*

*हे नारद! इसके लिए हम लोग संयुक्त प्रयास करें। हम प्रेरणा भरें, आप सम्पर्क साधें और उभारें। इस प्रकार वरिष्ठ आत्माओं की प्रसुप्ति जागेगी और वे युग मानवों की भूमिका निभा सकने में समर्थ हो सकेंगे।''* (31-36)

''हमें युग सृजन का अभियान आरम्भ करना चाहिए। जिनमें पूर्व संचित संस्कार होंगे, वे युग निमंत्रण सुनकर मौन बैठे न रह सकेंगे, उत्सुकता प्रकट करेंगे, समीप आवेंगे और परस्पर सम्बद्ध होंगे।''(38-39)

आगे के अलग-अलग श्लोकों में भगवान ने नारद जी को बताया कि समीप आए सत्पात्रों को सद्ज्ञान की देवी महाप्रज्ञा का तत्त्वदर्शन सार-संक्षेप में हृदयंगम कराया जाए। गायत्री उपासना, साधना, आराधना के आधार पर उभरे हुए उत्साह को किसी सरल कार्यक्रम में जुटा देना है, ताकि युगधर्म से वे परिचित और अभ्यस्त हो सकें। युग सृजन में सहयोग करने के लिए सभी भावनाशीलों में समयदान, अंशदान की उमंग उभारनी चाहिए। वरिष्ठों की इस संयुक्त शक्ति से ही दुर्गावतरण जैसी प्रचण्डता उत्पन्न होगी और युग समस्याओं के निराकरण में समर्थ होगी।

### बात मण्डलों की

नवयुग सृजन अभियान को लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए संगठित प्रयास आवश्यक हैं। अपने मिशन में संगठन की अनेक इकाइयाँ हैं। गायत्री शक्तिपीठें (गायत्री चेतना केन्द्र, शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ, चरणपीठ) युगसृजेताओं की वे छावनियाँ हैं, जिनका दायित्व जाग्रत् आत्माओं में आस्था संवर्धन व प्रेरणा-प्रशिक्षण का है। इनसे जुड़े समस्त प्रकार के मण्डल (प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डल, युवा मण्डल, स्वाध्याय मण्डल, संस्कृति मण्डल, दिया संगठन आदि) वे बुनियादी इकाइयाँ हैं जो युग निर्माण योजना को समाज के हर व्यक्ति तक पहुँचाने में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन्हीं के माध्यम से ज्ञानयज्ञ का पुण्य प्रकाश जन-जन तक पहुँचाने और जाग्रत् आत्माओं को खोजने-तराशने, मानव में देवत्व जगाने का कार्य प्रभावशाली ढंग से होता है।

युग निर्माण के सूत्रों को जन-जन तक पहुँचाने के विभिन्न माध्यमों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है- जनसंपर्क। हमारा जनसंपर्क अभियान जितना प्रभावशाली होगा, उसी अनुपात में हम ज्ञानयज्ञ और विचार क्रान्ति के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे। इसलिए **युग निर्माण आन्दोलन से जुड़े और परम पूज्य गुरुदेव के जीवनादर्शों के प्रति समर्पित प्रत्येक शिष्य, साधक, श्रद्धालु और समर्थक को किसी न किसी मण्डल का सदस्य होना ही चाहिए।**

### मण्डलों का स्वरूप

प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डल, युवा मण्डल आदि हमारे संगठन की वे इकाइयाँ हैं, जो छोटे-छोटे क्षेत्र या व्यक्ति समूहों में युग निर्माण योजना को पहुँचाने के लिए संकल्पित भाव के साथ सक्रिय हैं। यह कार्य नित्य-निरंतर प्रयासों से ही संभव है। ये पद नहीं, व्यक्तित्व प्रधान हैं। मण्डलों का लक्ष्य है आत्म निर्माण से समाज निर्माण। लोगों में **आस्तिकता** अर्थात् अपनी और अपने सृजेता की अकूत सामर्थ्य के प्रति अटूट विश्वास, **धार्मिकता** अर्थात् शरीर और समाज से जुड़े अपने कर्त्तव्यों का बोध तथा **आध्यात्मिकता** अर्थात् विवेकपूर्वक उत्कृष्टता को जीवन में धारण करने का साहस विकसित करना है। मण्डल के सदस्यों के व्यक्तित्व की प्रखरता और लक्ष्य के प्रति समर्पण-सक्रियता और संगठित प्रयासों पर उसकी उपलब्धियाँ निर्भर होती हैं।

हमारे मण्डल प्रशासनिक इकाइयाँ नहीं हैं। इन्हें वृक्षों की तरह विकसित और लोकमंगल के लिए समर्पित होना चाहिए। जैसे एक बीज क्रमशः विकसित होकर कालान्तर में अपने मूल वृक्ष की भाँति ही छाया, फल, फूल, आश्रय आदि देने लगता है, ठीक उसी तरह युग निर्माण योजना से जुड़े हर व्यक्ति को उपासना, साधना, आराधना द्वारा अपने व्यक्तित्व को इस प्रकार विकसित करना चाहिए कि उनका जीवन परम पूज्य गुरुदेव-वंदनीया माताजी के चरित्र, चिन्तन, विचार, व्यवहार के अनुरूप ढलता चला जाए। जिस अनुपात में इस दिशा में उन्हें सफलता मिलेगी, उसी अनुपात में उनके युग निर्माणी प्रयास सफल और प्रभावशाली होते जाएँगे। उसी अनुपात में उनमें अपने आराध्य देव की प्रेरणा का प्रकाश बढ़ता जाएगा। सर्वविदित है कि वाणी नहीं, व्यक्तित्व से दी गई शिक्षा ही प्रभावशाली होती है, उसी से समाज बदलते हैं।

> शान्तिकुञ्ज द्वारा गायत्री परिवार की समस्त ऑनलाइन गतिविधियों के लिए एक नीति निर्धारित की गई है। (देखें पृष्ठ 7)

लक्ष्य बड़ा है। उसी अनुपात में हमारी साधना और सक्रियता भी होनी चाहिए। परम पूज्य गुरुदेव ने हर वर्ष एक से पाँच और पाँच से पच्चीस होने की आशा हमसे रखी है। उसी अनुपात में हर क्षेत्र में सक्रिय मण्डलों की संख्या भी निरन्तर बढ़ती रहनी चाहिए।

अपने मिशन में ब्लॉक, जिला, जोन स्तर के संगठन भी बनाए गए हैं। उन्हें प्रशासक की नहीं, माली की भूमिका निभानी चाहिए। ये संगठन और शक्तिपीठें कार्यकर्त्ताओं की आस्था, योग्यता बढ़ाने तथा संगठित सक्रियता का निर्धारण एवं समन्वय करने की दृष्टि से आवश्यक एवं उपयोगी हैं।

### नई चुनौती, नये प्रयोग

मण्डलों का लक्ष्य समाज के चरित्र, चिंतन और व्यवहार को परिष्कृत करना है। लोगों के मन-मस्तिष्क से अविवेकपूर्ण सोच को दूर कर उन्हें प्रगतिशील आत्मकल्याणकारी एवं लोकमंगलकारी गतिविधियाँ अपनाने के लिए सहमत करना है। समाज में व्याप्त भय, भेद, नफरत और काटने-बाँटने की प्रवृत्ति शमन का कर उसमें शान्ति, सहयोग, सद्भाव का सकारात्मक एवं सृजनात्मक वातावरण तैयार करना है। योजना बड़ी है। परिवर्तन विश्व मानवता के विचारों में होना है। तद्नुरूप हमारे मण्डलों की संख्या और सक्रियता भी होनी चाहिए।

### लक्ष्य से भटकें नहीं

अपने प्रत्येक परिजन को यह बात भली भाँति हृदयंगम कर लेनी चाहिए कि हमारी लड़ाई किसी व्यक्ति, किसी संगठन या किसी धर्म-सम्प्रदाय से नहीं है। प्रज्ञावतार का संघर्ष मानवीय मन और विचारों में आई विकृति से तथा समाज में व्याप्त अवांछनीयताओं से है। इसलिए 'मानव मात्र एक समान' के उद्घोष को ध्यान में रखते हुए हर व्यक्ति के विचारों को प्रेम और सद्भाव के साथ बदलने का प्रयास हमें करना चाहिए।

अपने लक्ष्य की विराटता और समय के प्रभाव को देखते हुए हमें अपनी कार्यशैली भी प्रोन्नत करनी चाहिए। इन पंक्तियों के लेखक ने देखा है कि एक नेवी के बड़े अफसर भोजन अवकाश में ही अपने कुछ साथियों के साथ ध्यान और सत्संग किया करते थे। उनका लोगों पर बहुत प्रभाव था। प्रयास किए जाएँ तो घर, पड़ोस, दफ्तर में निरर्थक व्यतीत हो रहे समय का नियमित उपयोग कर युग निर्माण की दिशा में महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं।

### सोशल मीडिया पर सक्रियता

कोरोना काल के बाद सोशल मीडिया का प्रचलन बड़ी तेजी से बढ़ा है। युवा वर्ग की ऑनलाइन गतिविधियों में अधिक रुचि है। इसे देखते हुए गायत्री परिवार ने भी अपनी ऑनलाइन गतिविधियों में सक्रियता बहुत बढ़ाई है। दिया, मुम्बई जैसी कई शाखाएँ साप्ताहिक ज्ञान सभाएँ आयोजित कर रही हैं। युवा संगठन 'दिया' की पटना, दिल्ली जैसी कई शाखाएँ प्रेरणाप्रद कक्षाएँ चला रही हैं। ऑनलाइन गर्भ संस्कार के सेमीनार, ऑनलाइन बाल संस्कार शालाएँ, कर्मकाण्ड, संगीत आदि विविध प्रकार के प्रशिक्षण दिए जा रहे हैं, स्वाध्याय मण्डल और समूह साधना के कार्यक्रम चल रहे हैं।

प्रकारान्तर से देखा जाए तो विचार क्रान्ति के जिस उद्देश्य से विविध मण्डलों का गठन किया जाता है, यह ऑनलाइन गतिविधियाँ भी उसी प्रयोजन को पूरा करती हैं। आवश्यकता इस बात की है कि अधिक से अधिक लोग इस प्रकार के छोटे-छोटे समूह बनाकर सत्प्रेरणा संचार के विविध प्रयोग करें। **ध्यान यह रखा जाना चाहिए कि समूह के सदस्यों का साप्ताहिक या पाक्षिक समागम भी सुनिश्चित किया जाए, क्योंकि प्रत्यक्ष संपर्क और सामूहिक साधना, विचार विनिमय का कोई विकल्प नहीं है।** साधक के व्यक्तित्व को मुखर होने का अवसर प्रत्यक्ष सम्पर्क में ही अधिक मिलता है।

### पंजीयन और अनुशासन

शान्तिकुञ्ज द्वारा ऑनलाइन चल रही गतिविधियों में एकरूपता लाकर उन्हें अधिक प्रभावशाली बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए विशेष पाठ्यक्रम बनाए जा रहे हैं। अतः परिजनों से निवेदन है कि वे नियमित प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डल, युवा मण्डलों की तरह ही अपने ऑनलाइन समूहों का पंजीयन भी शान्तिकुञ्ज में अवश्य करायें, ताकि युगतीर्थ की प्रेरणा और मार्गदर्शन उन तक निरंतर पहुँचता रहे। प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डलों के पंजीयन के लिए पूर्ववत अपने-अपने जोनल संगठनों से तथा युवा मण्डलों के लिए युवा प्रकोष्ठ, शांतिकुंज से सम्पर्क किया जा सकता है।

# दक्षिण के दो तीर्थ-मदुरै और रामेश्वरम में शक्तिपीठ निर्माण के लिए भूमिपूजन

शान्तिकुञ्ज एवं दक्षिण भारत में बसे हिन्दी भाषी क्षेत्र के नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं के अथक प्रयास तथा पुरुषार्थ से दक्षिण भारत में भी अब गायत्री चेतना निरन्तर घनीभूत हो रही है। दक्षिणी राज्यों में पाँच अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न होने के बाद अब वहाँ के प्रसिद्ध तीर्थों में गायत्री शक्तिपीठों के निर्माण का सिलसिला भी चल पड़ा है। इसी क्रम में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी द्वारा दिनांक 3 जुलाई को मदुरै में और 4 जुलाई को रामेश्वरम में विशाल शक्तिपीठों के निर्माण के लिए भूमिपूजन एवं शिलान्यास के कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

### गायत्री चेतना केन्द्र, मदुरै

मदुरै के मस्तान पट्टी, शिवगंगाई रोड़ में 3800 वर्ग फीट क्षेत्र में तीन मंजिला गायत्री चेतना केन्द्र का निर्माण होने जा रहा है। श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शान्तिकुञ्ज द्वारा यह संचालित होगा।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी मदुरै में कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी बाँये मदुरै में और दायें रामेश्वरम में गायत्री चेतना केन्द्र निर्माण के लिए भूमिपूजन करते हुए

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने 3 जुलाई को प्रातः 9 से 10 के बीच यज्ञीय कार्यक्रम के साथ भूमिपूजन एवं शिलान्यास का कार्यक्रम सम्पन्न किया। इस कार्यक्रम में 16 हिन्दी भाषी और दो तमिल भाषी समुदायों के सैकड़ों प्राणवान परिजन उपस्थित रहे। मुख्य यजमान की भूमिका सौराष्ट्र ग्रुप के प्रमुख श्री जगन्नाथम जी, जो मदुरै अश्वमेध यज्ञ के संयोजक रहे श्री के.आर. राममूर्ति के सुपुत्र हैं एवं गायत्री परिवार मदुरै के प्रमुख श्री जोगसिंह राजपुरोहित थे। केन्द्र निर्माण से लेकर भूमिपूजन समारोह में श्री पूनमाराम जी ने विशिष्ट प्रशंसनीय योगदान दिया।

मीनाक्षी मंदिर के दर्शन हेतु पहुँचे शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि एवं स्थानीय प्रमुख कार्यकर्त्ता

भूमिपूजन के उपरान्त डॉ. चिन्मय जी ने उपस्थित कार्यकर्त्ता एवं श्रद्धालुओं की सभा को सम्बोधित किया। इस अवसर पर उन्होंने गायत्री चेतना केन्द्र निर्माण की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह केन्द्र हर वर्ग के लोगों के बीच एकता और सद्भाव का माध्यम बनेगा। उन्होंने कहा कि युगशक्ति गायत्री का अवतरण मानवता को नई सोच और नया जीवन देने के लिए हुआ है।

**स्नेह मिलन समारोह**

3 जुलाई की शाम युग निर्माण आन्दोलन के लिए समर्पित कार्यकर्त्ताओं पर युगतीर्थ की प्राण ऊर्जा के अभिसिंचन के नाम रही। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी दक्षिण भारत में मिशन के भवन को भव्य आकार दे रहे शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि दक्षिण जोन प्रभारी श्री परमानन्द द्विवेदी, श्री उत्तम गायकवाड़, श्री रामदास रघुवंशी, श्री रामावतार पाटीदार, श्री ऋषभ नारायण सिंह एवं परिव्राजक संजय जी के संग कार्यकर्त्ताओं के घर गए, देवस्थापनाएँ कीं। वे चेतना केन्द्र के सातों ट्रस्टियों के घर गए और अखण्ड ज्योति अनुवाद के कार्य में प्रमुख योगदान दे रहे श्री मोहन जी के घर भी गए। केन्द्रीय प्रतिनिधियों का अपने घर स्वागत करते हुए कार्यकर्त्ता भावविभोर हो उठे।

## रामेश्वरम में गुरुकृपा का अद्भुत संयोग

गायत्री परिवार तिरुपुर के प्रमुख सहयोग से भगवान शिव के धाम रामेश्वरम में भव्य गायत्री चेतना केन्द्र का निर्माण हो रहा है। 4 जुलाई को आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने इसके लिए भूमिपूजन किया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों के साथ केन्द्र के निर्माण की व्यवस्थाएँ सँभाल रहे श्री करुण कुमार दुबे, श्री हरीश व्यास और श्री शंकर भाई पटेल के अलावा 60-70 तमिल भाषी कार्यकर्त्ता बहिनें भी समारोह में उपस्थित रहीं।

भूमिपूजन के उपरांत आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने अपने मार्मिक उद्बोधन से कार्यकर्त्ताओं में आत्मीयता और उत्साह का संचार किया। केन्द्र के निर्माण में विशिष्ट योगदान दे रहे श्री ऋषभ नारायण सिंह ने उद्बोधन का तमिल में अनुवाद किया।

### पू. गुरुदेव ने जिस भूमि पर यज्ञ किया, वहीं बनेगा चेतना केन्द्र

रामेश्वरम में गायत्री चेतना केन्द्र का निर्माण रामकदम रोड पर साक्षी हनुमान मंदिर से लगी भूमि पर हो रहा है, जो रामेश्वरम मंदिर से लगभग डेढ़ कि.मी. दूर है। यह वही स्थान है जहाँ सन् 1963 में परम पूज्य गुरुदेव ने पाँच कुण्डीय यज्ञ किया था। यह चेतना केन्द्र 10,000 वर्ग फीट भूमि में निर्मित हो रहा है। भूमि उपलब्ध कराने में साक्षी हनुमान मंदिर के पुजारी की अहम भूमिका रही है।

**धनुष कोटि में ध्यान और रामेश्वरम दर्शन** : 4 जुलाई को आदरणीय डॉ. चिन्मय जी व शान्तिकुञ्ज के अन्य प्रतिनिधि सहित 25 कार्यकर्त्ता धनुष कोटि गए। वहाँ सबने उगते सूर्य के दिव्य दर्शन के संग ध्यान किया, तत्पश्चात् भगवान रामेश्वरम मंदिर का दर्शन, पूजन किया।

# शान्तिकुञ्ज से ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोलियों की विदाई

## पूरे देश में आयोजित हो रहे हैं कार्यकर्त्ता बहिनों के प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

श्रद्धेया शैल जीजी ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोलियों को विदाई देते हुए

गायत्री परिवार द्वारा वर्ष 2022-23 को 'नारी सशक्तीकरण वर्ष' के रूप में मनाया जा रहा है। इसके अंतर्गत पूरे देश में नारी सशक्तीकरण प्रधान कार्यक्रमों के आयोजन होंगे। इन्हें प्रभावशाली बनाने के लिए शान्तिकुञ्ज ने पूरे देश में पाँच दिवसीय कार्यकर्त्ता बहिनों के प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए हैं, जो आगामी अक्टूबर माह तक चलेंगे। इनका संचालन शान्तिकुञ्ज से निकली ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोलियाँ करेंगी।

गुरुपूर्णिमा की मंगलवेला में श्रद्धेया शैल जीजी एवं श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव जी ने ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोलियों को भावभरी विदाई दी। प्रथम चरण में बहिनों की पाँच टोलियाँ रवाना हो रही हैं, जिनका नेतृत्व सुश्री दीना बेन त्रिवेदी, श्रीमती सुधा महाजन, श्रीमती श्यामा राठौर, श्रीमती शकुंतला साहू एवं श्रीमती रेखा गोस्वामी कर रही हैं।

श्रद्धेय द्वय ने नारी सशक्तीकरण अभियान को परम वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष-2026 की तैयारियों का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण अध्याय बताया। उन्होंने कहा कि इस वर्ष देश की देवियों को उनकी सनातन गरिमा का बोध कराया जाएगा। उन्हें मूढ़ मान्यता, अंधविश्वास एवं अवांछनीय परम्पराओं से मुक्त कर परिवार और समाज में सकारात्मकता, सद्भाव, सृजनात्मकता के विकास के लिए प्रेरित किया जाएगा।

**नारी सशक्तीकरण वर्ष**

**जन्मशताब्दी वर्ष-2026 की तैयारियों का महत्त्वपूर्ण अध्याय**

**सशक्त नारी ही संस्कारवान परिवार व सभ्य-सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकती है।**

**प्रशिक्षण-पुनर्बोध शिविर में आद. शेफाली पण्ड्या जी के उद्गार**

गुरुपूर्णिमा पर्व पर श्रद्धेया जीजी द्वारा ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली को विदाई देने से पूर्व गायत्रीतीर्थ-शान्तिकुञ्ज में 1 से 5 जुलाई 2022 की तिथियों में बहिनों का विशेष प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। यह शिविर टोलियों के पुनर्बोध हेतु आयोजित किया गया था। ये ब्रह्मवादिनी बहिनें पूरे देश में आयोजित हो रहे नारी सशक्तीकरण वर्ष के निमित्त प्रशिक्षक प्रशिक्षण सत्रों का संचालन करेंगी। उल्लेखनीय है कि शिविर की प्रतिभागी बहिनें लगभग डेढ़ माह पूर्व से अपने विषयों की बड़ी तन्मयता के साथ तैयारी कर रही थीं।

शिविर का शुभारम्भ गायत्री विद्यापीठ व्यवस्था मण्डल की प्रमुख आदरणीया श्रीमती शेफाली पण्ड्या एवं वरिष्ठ बहिनों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। तत्पश्चात् पाँच दिन चले शिविर को सम्बोधित करते हुए शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा, डॉ. ओ.पी. शर्मा, डॉ. गायत्री शर्मा, प्रो. प्रमोद भटनागर, श्री श्याम बिहारी दुबे, श्री केदार प्रसाद दुबे आदि अनेक वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने अपने अनुभव और विचार साझा किए।

आदरणीया शेफाली जी ने अपने उद्घाटन उद्बोधन में कहा कि नारीशक्ति के उत्थान के बिना समाज के विकास की कल्पना अधूरी है। हमें बहिनों को युग साधना के लिए प्रेरित कर उन्हें अंधविश्वास एवं कुरीतियों से मुक्त कराना होगा। सशक्त नारी ही संस्कारवान परिवार व सभ्य-सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकती है।

## सूक्ष्म यज्ञ/नैनो यज्ञ

### परम पूज्य गुरुदेव की विचारधारा के अनुरूप नहीं हैं।

## यह स्थगित कर दिए गए हैं

### यज्ञ के व्यवसायीकरण से बचें, इनका प्रयोग न करें

परम पूज्य गुरुदेव और परम वन्दनीया माताजी ने अपने प्रचण्ड तप से युग परिवर्तन हेतु युगशक्ति का अवतरण किया और गायत्री एवं यज्ञमय वातावरण का निर्माण किया। समस्त गायत्री परिजन उनके द्वारा दिए गए गायत्री उपासना और यज्ञ विधान से उत्पन्न प्रचण्ड ऊर्जा से व्यक्ति, परिवार एवं समाज में अभीष्ट परिवर्तन लाने हेतु संलग्न एवं सक्रिय हैं।

आज की विषम परिस्थितियों में जहाँ व्यक्ति, परिवार और राष्ट्र बिखर रहे हैं, हमें परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित निर्देशों पर अडिग रहकर ही सारे वातावरण को गायत्रीमय एवं यज्ञमय बनाना है। ऐसे समय में यज्ञ विधान भी उनके द्वारा रचित हो, यह जरूरी है। **सामान्य परिभाषा में प्रचलित शब्द जैसे सूक्ष्म यज्ञ, नैनो यज्ञ इत्यादि यज्ञ की शास्त्रोक्त गरिमा एवं परम पूज्य गुरुदेव द्वारा दिए गए विधान के अनुकूल नहीं हैं एवं गायत्री परिवार, शान्तिकुञ्ज द्वारा प्रदत्त भी नहीं हैं। इनके प्रति गायत्री परिजन सावधान रहें।**

यज्ञ के मूल उद्देश्य की पूर्ति **परम पूज्य गुरुदेव के तप से सिंचित विधान के अनुसार** यज्ञीय कर्मकाण्ड करने से एवं उनके निर्देश के अनुसार यज्ञ की प्रेरणा को जीवन में उतारने से ही संभव है। उसी से युग परिवर्तनकारी वातावरण का निर्माण होना है। अतः सभी परिजनों से भाव भरा निवेदन है कि पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त यज्ञीय विधान के अतिरिक्त अन्य शब्दावलियों एवं विधियों का प्रयोग न करें, ताकि यज्ञीय गौरव-गरिमा अक्षुण्ण रह सके।

**विशेष ध्यानाकर्षण** : सूक्ष्म यज्ञ जैसे नए प्रयोग यज्ञ के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए अपनाए गए थे। कालान्तर में उन्हें बलिवैश्व देवयज्ञ अथवा परम पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रचलित सर्वमान्य सूत्रों से युक्त दीपयज्ञ के लिए प्रेरित किया जाना था, लेकिन देखा गया कि अनेक लोगों ने इस **व्यवसाय का साधना बना लिया है**। यह उचित नहीं है, इसे हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

**नारी इस सृष्टि का सौन्दर्य है। स्नेह उसकी प्रवृत्ति है और अनुदान उसका स्वभाव।**

# लोकमंगल के पथ पर बढ़ते कदमों का हार्दिक अभिनन्दन

## गायत्री चेतना केन्द्र औरंगाबाद को मिला सनातन समाज भूषण सम्मान

### राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त गोलेगाँव के आदर्श विकास में दिया है असाधारण योगदान

श्री राजेश टाँक सम्मान ग्रहण करते हुए

**औरंगाबाद। महाराष्ट्र**

अपनी संस्कृति और राष्ट्र के उत्थान के लक्ष्य के साथ सेवा करते हुए समाज के हर वर्ग में नवचेतना जगा रहे गायत्री चेतना केन्द्र औरंगाबाद को लायन्स क्लब्स इंटरनेशनल की ओर से सम्मानित किया गया। दिनांक 1 जुलाई 2022 को आयोजित पदग्रहण शपथ समारोह में चेतना केन्द्र संचालक श्री राजेश टाँक को लायंस क्लब इंटरनेशनल के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने प्रशस्ति पत्र के साथ 'सनातन समाज भूषण' सम्मान प्रदान किया।

**गोलेगाँव के आदर्श विकास में गायत्री परिवार का योगदान**

- स्वच्छता अभियान की परंपरा चलाई।
- गाँव की खंडोबा नदी का गहरीकरण कर उसे पुनर्जीवित किया।
- काला छापा पहाड़ी को हराभरा करने के लिए 15-20 हजार पेड़ लगाए।
- कुछ वर्ष वहाँ अकाल पड़ा, तब चेतना केन्द्र ने गोमाता और बैलों के लिए चारा उपलब्ध कराया।

## गायत्री परिवार के सहयोग से जैविक कृषि की ओर अग्रसर हुए गोलेगाँव के कृषक

औरंगाबाद जिले की खुलताबाद तहसील में स्थित गोलेगाँव अब प्राकृतिक खेती की ओर बढ़ रहा है। गायत्री चेतना केन्द्र औरंगाबाद इस कार्य में भी गाँव के कृषकों को पूरा-पूरा मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान कर रहा है।

गोलेगाँव के किसान 'सत्यमेव जयते फार्मर कप प्रतियोगिता-2022' में भाग ले रहे हैं। प्रतियोगिता का उद्देश्य प्राकृतिक खाद, कीटनाशक के प्रयोग के साथ खेती करते हुए धरती माँ तथा उपज को विषमुक्त करना तथा कम खर्च में ज्यादा पैदावार करना है।

गाँव में आठ किसान संगठन बने हैं, जिनमें से तीन गायत्री परिवार का सहयोग लेते हुए प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं। उनके द्वारा लगभग 55 एकड़ भूमि पर कपास और मक्का की खेती की जा रही है। गायत्री परिवार के सदस्य व गाँव के उप सरपंच श्री संतोष जोशी ने उन्हें 1700 लीटर **दशपर्णी कीटनाशक** तथा 4800 लीटर **नीम अर्क कीटनाशक** बनाकर दिया। बाहरी कीटों के प्रभाव से फसलों को बचाने के लिए चिपचिपा जाल, कामगंध जाल तथा प्रकाश जाल की आवश्यकता थी। किसानों की माँग पर चेतना केन्द्र ने इस दिशा में भी सहयोग किया। उनके द्वारा 500 तेल के खाली पीपे (15 लीटर वाले) और ग्लू एवं पीला व नीला पेण्ट दिया गया। इनके द्वारा चिपचिपा जाल बनाया गया।

गुरुपूर्णिमा के पावन अवसर पर परम पूज्य गुरुदेव, परम वंदनीया माताजी के पूजन के साथ गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हुए चिपचिपा जाल का पूजन कर उन्हें किसानों में बाँटा गया। कृषिकार्य में नित्य गायत्री मंत्र का प्रयोग करने की सलाह दी गई। इससे उत्साहित किसानों ने कहा कि माँ गायत्री के प्रति आस्था के साथ किया गया प्रयोग निश्चित ही अच्छी और सच्ची राह दिखाएगा।

**चिपचिपा जाल**

फसल को कीटों से बचाने के लिए टिन को पीले या नीले रंग से रंग दिया जाता है। उस पर एक विशेष प्रकार का चिपचिपा गोंद लगाया जाता है। इन्हें खेतों में डण्डे गाड़कर उन पर कील से टाँग दिया जाता है। कीड़े रंग की ओर आकर्षित होकर उसके गोंद में चिपक जाते हैं। गायत्री परिवार द्वारा बनाई गई यह विशेष संरचना दो-तीन साल तक कीड़ों से फसलों को बचाती है।

## सँवार रहे हैं अनाथ बालिकाओं का जीवन

### अभिभावक बनकर किया कन्यादान

**अल्मोड़ा। उत्तराखण्ड**

मिशन के समर्पित कार्यकर्ता और देसंविवि. के पूर्व शिक्षक डॉ. अजीत तिवारी ने राजकीय किशोरी संरक्षण गृह अल्मोड़ा में रह रही बालिकाओं के जीवनोत्कर्ष में अहम भूमिका निभाई है। उन्होंने सन् 2016 से अब तक इस संरक्षण गृह की 10 अनाथ बालिकाओं को एक अभिभावक के रूप में देव संस्कृति विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा हेतु भेजा है। सभी अपना पाठ्यक्रम पूरा कर चुकी हैं तथा कुछ का प्लेसमेण्ट भी हो चुका है।

**10 बालिकाओं को सहारा दे चुके हैं डॉ. अजीत तिवारी दम्पती**

डॉ. अजीत तिवारी इन दिनों अल्मोड़ा में जिला आयुर्वेद अधिकारी हैं। बालिकाओं के भविष्य को सँवारने में उन्हें तत्कालीन जिलाधिकारी सविन बसंल का विशेष सहयोग मिला। अपने पथ प्रदर्शक श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, कुलाधिपति देसंविवि तथा आदरणीय डॉ. चिन्मय जी, प्रतिकुलपति देसंविवि. की प्रेरणा और आशीर्वाद से पीड़ित मानवता की सेवा का यह शानदार कार्य वे सम्पन्न कर सके हैं।

डॉ. अजीत तिवारी एवं श्रीमती पूनम तिवारी ने अपने अभिभावक धर्म का पालन करते हुए इन 10 बालिकाओं में से एक निर्मला का विवाह देव संस्कृति विश्वविद्यालय के ही एक स्वयंसेवक सुभाष के साथ 24 जून 2022 को सम्पन्न हुआ। श्रद्धेय द्वय ने नवदम्पति के साथ कन्यादान करने वाले तिवारी दम्पति को भी उनकी सेवा भावना के लिए बहुत-बहुत आशीर्वाद दिए।

## गरीब कन्याओं का सहारा बन रही है

### माता भगवती देवी बेटी विवाह आयोजन समिति, राजगढ़

**राजगढ़, अलवर। राजस्थान**

25 जून को गायत्री परिवार राजगढ़ ने शक्तिपीठ पर एक ऐसी कन्या का विवाह सम्पन्न कराया, जिसकी सगाई लगभग 2 वर्ष पूर्व ही हो गई थी, लेकिन पिता की कोरोना के कारण मृत्यु हो गई, घर की आर्थिक स्थिति कमजोर थी, जिसके कारण उनकी माँ और भाई उसका विवाह नहीं कर पा रहे थे। गायत्री परिवार राजगढ़ ने दोनों पक्षों से सम्पर्क कर बिना दहेज के शक्तिपीठ पर विवाह कराने पर सहमति बनाई। जयपुर से बारात आई, गायत्री परिवार की आदर्श परम्पराओं के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। गायत्री परिवार के परिजनों ने नगद राशि और वस्तु देकर कन्यादान किया।

25 जून के दिन ही गायत्री परिवार का एक पारिवारिक सम्मेलन शक्तिपीठ पर आयोजित हुआ। इसमें अलवर जिले के साथ आसपास के जिलों के प्रतिष्ठित गणमान्यों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में 'माता भगवती देवी बेटी विवाह आयोजन समिति, राजगढ़' का गठन किया गया, जो आगे भी गरीब कन्याओं की इसी प्रकार सहायता करती रहेगी। सम्मेलन में ही 51 परिजनों ने इसकी सदस्यता का संकल्प पत्र भरा। ये सदस्य गायत्री शक्तिपीठ राजगढ़ में होने वाले इस प्रकार के प्रत्येक विवाह में कम से कम 1100/- रुपये का सहयोग करेंगे।

## 49वाँ रक्तदान शिविर, 217 यूनिट रक्तदान हुआ

**जमशेदपुर। झारखण्ड**

नवयुगदल टाटानगर द्वारा 26 जून 2022, रविवार के दिन 49 वाँ रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। यह शिविर स्वर्गीय जयप्रकाश नारायण जी की पुण्य स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जयंती देवी के सौजन्य से जमशेदपुर ब्लड बैंक में आयोजित किया गया। इस रक्तदान शिविर में कुल 217 यूनिट रक्त का संग्रह कर ब्लड बैंक जमशेदपुर को समर्पित किया गया।

पीड़ित मानवता की सेवा में समर्पित नवयुगदल टाटानगर के उत्साही युवा

मुख्य अतिथि श्री मंगल कालिंदी, विधायक जुगसलाई विधानसभा तथा अन्य गणमान्य डॉ. परितोष कुमार सिंह जिला परिषद गोविंदपुर, जनप्रतिनिधि श्री अभय सिंह, श्री दिनेश कुमार, श्री प्रमोद कुमार निदेशक भगेरिया फाउंडेशन, चक्रधरपुर के साथ श्रीमती रेखा शर्मा प्रज्ञा महिला मंडल, टाटानगर, एवं प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ के संयोजक श्री संतोष कुमार राय की उपस्थिति में यह शिविर अत्यंत सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

**25 सितम्बर को झारखंड के सभी जिलों में रक्तदान होगा**

प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ झारखण्ड के संयोजक ने बताया कि नवयुगदल टाटानगर का 50वाँ रक्तदान शिविर आगामी 25 सितम्बर 2022 को आयोजित होगा। 50वें रक्तदान शिविर के उपलक्ष्य में झारखंड के सभी 24 जिलों में एक साथ एक दिन रक्तदान शिविर आयोजित किए जाएँगे।

## दिया, मुम्बई ने बाँटे छाते

**मुलुण्ड, मुम्बई। महाराष्ट्र** : दिया, मुम्बई अपने 'प्रोजेक्ट स्माइल' के माध्यम से पिछड़ों, गरीबों का सहारा बनकर उनमें आशा, उत्साह और आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील रहा है। इन्हीं प्रयासों के अन्तर्गत 26 जून को दिया के सदस्यों ने वर्षाकाल की प्रतिकूलताओं से बचाव के लिए छाता, रेनकोट, तिरपाल और दवाएँ वितरित किये। उन्होंने यह सामग्री मुलुंड में नेप्च्यून कलरस्केप के सुरक्षा गार्डों में वितरित की। सभी ने साथ-साथ गायत्री मंत्रोच्चार किया।

## अखण्ड साप्ताहिक वृक्षारोपण अभियान

**जहानाबाद। बिहार** : युवा प्रकोष्ठ जहानाबाद ने अपने रविवारीय साप्ताहिक वृक्षारोपण कार्यक्रम के अंतर्गत 57वें सप्ताह-3 जुलाई को काको प्रखंड के बढ़ौना गांव में 1500 पौधों का रोपण किया गया। कृषक श्री ब्रजेश कुमार की निजी जमीन पर एक हजार सागवान, चार सौ पपीता, दस आम, दस अमरुद, पचास नींबू, दस कटहल, पंद्रह केला पाँच शहतूत के पौधे रोपे गए।

इससे पूर्व 26 जून को मखदुमपुर प्रखंड के उमता धरनई थाना परिसर में इकतीस फलदार एवं छायादार पौधों का रोपण किया गया। इस अवसर पर थानाध्यक्ष श्री मनोज कुमार ने पर्यावरण संकट को पूरी मानवता के सामने खड़ी सबसे बड़ी समस्या बताया। उन्होंने कहा कि वृक्ष के बिना जीवन की कल्पना व्यर्थ है।

वृक्षारोपण से पूर्व वृक्ष पूजन-रक्षासूत्र बंधन के साथ उपस्थित लोगों को पौधों की सुरक्षा और देखभाल के संकल्प कराए गए। गायत्री परिवार की ओर से श्री रंजीत कुमार ने सभी से इस वर्षा ऋतु में कम से कम पाँच पौधा अवश्य लगाने का अनुरोध किया।

उमता धरनई थाना परिसर में वृक्षारोपण

## 'नशा मुक्ति फिल्म' देख रोमांचित हुए दर्शक

**देवास। मध्य प्रदेश** : अंतर्राष्ट्रीय नशा निवारण दिवस-26 जून 2022 के दिन देवास की तुलजा विहार कॉलोनी के महादेव मंदिर में गायत्री परिवार की देवास शाखा द्वारा नशाबंदी आयोजन संपन्न हुआ। इस अवसर पर नशे के दुष्प्रभावों से सम्बन्धित एक फिल्म दिखाई गई, जिसने दर्शकों को बहुत प्रभावित किया। नशे के बीभत्स परिणाम देखकर महिलाएँ और बच्चे भी अपने घर के सदस्यों को नशा छोड़ने के लिए मजबूर करने हेतु प्रेरित हुए।

**120वाँ नशामुक्ति कार्यक्रम**

गायत्री परिवार मीडिया प्रभारी विक्रम सिंह चौधरी के अनुसार गायत्री परिवार के युवा समन्वयक प्रमोद निहाले सहित अरुण शैव, मनीष व्यास, हजारीलाल चौहान, सालीग्राम सकलेचा, प्रहलाद सोलंकी, मेहरबान सोलंकी, कॉलोनी के पार्षद ने इस कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाने के अथक प्रयास किए। उनके प्रयासों से बड़ी संख्या में कॉलोनी के निवासी इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए। उन्हें बताया गया कि एक बण्डल बीड़ी रोज पीने वाला व्यक्ति 20 वर्षों में डेढ़ लाख रुपये की बीड़ी पी जाता है। इनके कारण होने वाली बीमारियों पर जो खर्च होता है वह अलग है। सिगरेट, पाउच, शराब, गाँजा, भाँग के व्यसनी का खर्च तो इससे कई गुना अधिक है।

कार्यक्रम के अंत में नशामुक्ति सम्बन्धी साहित्य और परिपत्र बाँटे गए। दर्शकों से इस अभियान में सक्रिय सहयोग के लिए अनुरोध किया गया।

# 1000 सार्वजनिक स्थानों पर लगाये जा रहे हैं भावार्थ सहित गायत्री मंत्र के बैनर

## दैनिक ज्ञानयज्ञ से उभरी वेदना से आरम्भ हुआ अभियान

**प्रयागराज। उत्तर प्रदेश**

गायत्री ज्ञानयज्ञ शाखा प्रयागराज नियमित रूप से प्रतिदिन सैकड़ों लोगों तक निःशुल्क युग साहित्य पहुँचा रही है। शाखा कार्यवाहक श्री देवब्रत साहा राय ने बताया कि वे बच्चों को गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ भी निःशुल्क देते हैं। देने से पहले बच्चों से मंत्र और भावार्थ बुलवाते हैं। इस क्रम में उन्हें ज्ञात हुआ कि गायत्री मंत्र तो सभी को कंठस्थ है, लेकिन भावार्थ 99 प्रतिशत लोगों को नहीं पता है। इसे देखते हुए शाखा ने विद्यालयों तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर भावार्थ सहित गायत्री मंत्र के बैनर लगाने का निर्णय लिया गया।

लगाए गए बैनर की झलक

प्रयागराज शाखा ने 1000 स्थानों पर 5 फीट X 3 फीट के बैनर लगाने का निश्चय किया है, जिनमें से लगभग 500 स्थानों पर लगा दिये गए हैं। ये बैनर विद्यालय, मंदिर, घर, दुकान तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर लगाए जा रहे हैं।

# विद्यालय में वाङ्मय एवं विपुल साहित्य की स्थापना

## 11 विद्यालयों में स्थापना का है संकल्प

**प्रयागराज। उत्तर प्रदेश**

शकुन विद्या निकेतन इण्टर कॉलेज, देवरख, नैनी में दिनांक 12 जुलाई को समारोहपूर्वक पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित विपुल साहित्य की स्थापना हुई। भूतपूर्व सूबेदार मेजर इं. श्री एल.बी. सिंह, आर.डी.एस.ओ. लखनऊ के सौजन्य से यह स्थापना कराई। इस अवसर पर वाङ्मय के 71 खण्ड, उपनिषद के ज्ञानखण्ड, ब्रह्मविद्याखण्ड, साधना खण्ड, प्रज्ञापुराण सहित समस्त आर्षग्रंथ, 46 महापुरुषों की जीवनी, बाल निर्माण की कहानियों के सेट से विद्यालय को ज्ञान-समृद्ध किया गया।

> दिनांक 11 जुलाई 2022 को इं. श्री एल.बी. सिंह जी की ओर से माधव ज्ञान केन्द्र इण्टर कॉलेज, खरगौनी, नैनी, प्रयागराज में भी इसी प्रकार युगऋषि के समस्त वाङ्मय एवं अन्य विपुल साहित्य की स्थापना कराई गई।

युग साहित्य स्थापना समारोह में विद्यालय के निदेशक डॉ. अशोक कुमार मिश्रा, श्री जगदीश चंद्र जोशी, श्री शेषनाथ श्रीवास्तव ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रधानाचार्य श्रीमती शकुन्तला मिश्रा, उप प्रधानाचार्य सुश्री आकांक्षा मिश्रा, सहित समस्त शिक्षक, विद्यार्थी एवं ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित गायत्री परिवार ज्ञानयज्ञ शाखा प्रयागराज से जुड़े अनेक परिजन उपस्थित थे। सर्वश्री विनोद कुमार ओझा, ओम प्रकाश तिवारी, विनोद कुमार लाल, राजेश कुमार सिंह, अवधेश सिंह एवं सरयु प्रसाद विश्वकर्मा का विशेष योगदान रहा।

शकुन विद्या निकेतन इण्टर कॉलेज के वाङ्मय स्थापना समारोह में विद्यालय के निदेशक डॉ. मिश्रा देव पूजन करते हुए

# 366 सार्वजनिक पुस्तकालयों में स्थापित किए वाङ्मय सेट

## गायत्री ज्ञान मंदिर इंदिरा नगर, लखनऊ द्वारा विगत 12 वर्षों से सतत चलाया जा रहा है अभियान

**लखनऊ। उत्तर प्रदेश**

गायत्री ज्ञान मंदिर के ज्ञानयज्ञ अभियान के अन्तर्गत 1 जुलाई 2022 को के.वी. कॉलेज ऑफ एजुकेशन, बसहरा बारा, प्रयागराज के केन्द्रीय पुस्तकालय में युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के वाङ्मय के सम्पूर्ण 79 खण्डों की स्थापना हुई। यह स्थापना लखनऊ की सक्रिय कार्यकर्त्ता श्रीमती शकुन्तला मणि त्रिपाठी ने अपने जीवन साथी स्व. सुदर्शन मणि त्रिपाठी की स्मृति में कराई है।

यह कार्यक्रम रामेश्वर ग्रुप के प्रधान कार्यालय, लखनऊ में सम्पन्न हुआ। इसमें महाविद्यालय के छात्र-छात्रा एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं ने भाग लिया। संस्था के महानिदेशक प्रो.एस.एन. त्रिपाठी एवं श्रीमती ऊषा सिंह ने भी अपने विचार रखे। अभियान संयोजक श्री उमानंद शर्मा ने पूर्वजों की स्मृति में किए जाने वाले ज्ञानदान को उत्तम कोटि का दान बताया। समस्त उपस्थित जनों को अखण्ड ज्योति पत्रिका भेंट की गई। प्राचार्य डॉ. आर. के. सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन व्यक्त किया।

इससे पूर्व बाबू सुन्दर सिंह कॉलेज ऑफ फार्मेसी रायबरेली रोड, निगोहा लखनऊ के पुस्तकालय में समारोहपूर्वक युगऋषि के वाङ्मय के समस्त 79 खण्डों की स्थापना हुई। गायत्री परिवार के श्री हंस जी ने अपने सम्मानित पूर्वजों की स्मृति में यह साहित्य भेंट किया। श्री उमानंद शर्मा, संस्था के चेयरमैन ई. आनंद शेखर सिंह, श्री एस.डी. मिश्रा ने साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। संस्थान के निदेशक डॉ. अलोक कुमार शुक्ला जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

### दैनिक भास्कर के पुस्तकालय में

12 वर्षों से सतत चल रहे अभियान के अन्तर्गत 366वीं स्थापना 8 जुलाई 2022 को सक्रिय कार्यकर्ती श्रीमती ऊषा किरन सिंह निवासी रम्पुरा, फकीरे, पूरनपुर, पीलीभीत ने अपने प्रिय जीवनसाथी स्व. कुँवर बैजनाथ सिंह की स्मृति में लोकप्रिय समाचार पत्र दैनिक भास्कर के लखनऊ कार्यालय के संदर्भ पुस्तकालय में युगऋषि के वाङ्मय के सभी 79 खण्डों की स्थापना कराई। इस अवसर पर उपस्थित पत्रकार बन्धुओं को युग निर्माण योजना का गायत्री विशेषांक भेंट किया गया। समाचार पत्र के संपादक श्री मनीष अवस्थी एवं ब्यूरो चीफ श्री हेमचन्द तोमर, डॉ. नरेन्द्र देव ने परम पूज्य गुरुदेव के साहित्य की स्थापना पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इसकी विशेषताओं पर प्रकाश डाला। वाङ्मय स्थापना अभियान संयोजक श्री उमानन्द शर्मा, डॉ. नरेन्द्र देव, श्री अनिल भटनागर, श्रीमती ऊषा सिंह इस अवसर पर उपस्थित थे।

दैनिक भास्कर के कार्यालय में वाङ्मय स्थापना के अवसर पर उपस्थित पत्रकार

# अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

## तैयार करेंगे अपने जैसा एक नया योग साधक

**'सादा जीवन, उच्च विचार' के सूत्र को अपनाना उच्च कोटि की योग साधना है।**

**उज्जैन। मध्य प्रदेश** : 8वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन ने योग को मानवीय उत्कर्ष को प्राप्त करने का विज्ञान बताया। शक्तिपीठ प्रतिनिधियों ने कहा कि 'सादा जीवन, उच्च विचार' के सिद्धान्त को जीवन में उतारना भी उच्च कोटि की योग साधना है। शक्तिपीठ पर आयोजित मुख्य समारोह में 75 साधकों ने एक वर्ष में अपने जैसा कम से कम एक योग साधक तैयार करने का संकल्प लिया।

शक्तिपीठ उज्जैन की ओर से अनेक संस्थानों में योग दिवस के विशेष कार्यक्रम सम्पन्न कराए गए। सायंकाल बास्केटबॉल एरीना माधव कॉलेज में बच्चों के साथ अभिभावकों ने सामूहिक योगाभ्यास किया।

उज्जैन विक्रम विश्वविद्यालय, आरोग्य भारती द्वारा आयोजित योग दिवस समारोह में गायत्री परिवार उज्जैन के वरिष्ठ डॉ.एन एस शर्मा आयुर्वेद चिकित्सक को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। उन्होंने योग को व्यावहारिक जीवन में अपनाने के सूत्र दिए तथा अपने व्यक्तिगत अनुभव भी बांटे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अखिलेश कुमार पांडेय कुलपति विक्रम विश्वविद्यालय ने की तथा वक्ता डॉ. अशोक कुमार वार्ष्णेय सचिव आरोग्य भारती थे।

**वाराणसी। उत्तर प्रदेश**

आठवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट वाराणसी के संयोजन में पंचाग्नि अखाड़ा घाट, रानी घाट एवं निषाद घाट पर भव्य योग कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इन कार्यक्रमों में कई विद्यालयों के शिक्षक-विद्यार्थियों सहित लगभग 500 लोगों ने भाग लिया। गायत्री परिवार ने योग से स्वास्थ्य और जीवन के समग्र उत्कर्ष के लिए सूर्योदय से पूर्व भ्रमण करने, प्रकृति का सान्निध्य बढ़ाने तथा मनोविकारों से बचने के लिए अपनी सोच में सकारात्मकता को बढ़ाने की प्रेरणाएँ दीं।

रानी घाट पर श्रीमती पुष्पा रानी, श्री रामेश्वर यादव, श्री अनिलेश तिवारी एवं कुमारी शाम्भवी ने, निषाद घाट पर श्री दिनेश मौर्य, रुचि सिंह, ओम नारायण भारद्वाज तथा पं. गंगाधर उपाध्याय और पंचाग्नि अखाड़ा घाट पर श्री अभिषेक त्रिपाठी एवं प्रमुख व्यवसायी श्रीमती शारदा त्रिवेदी ने प्रशासन द्वारा निर्धारित प्रोटोकॉल के तहत योग, आसन एवं ध्यान का कार्यक्रम सम्पन्न कराया।

# एक वर्षीय सक्रियता के संकल्प व कार्यकर्त्ताओं का सम्मान

कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित करतीं विधायक

**संकल्प :**

- 51 नए प्रज्ञा मण्डल सक्रिय करना
- 51 बाल संस्कार शालाओं का संचालन
- 10,000 विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में शामिल कराना
- 1000 वृक्षों का रोपण-संरक्षण
- 101 विद्यालयों में व्यक्तित्व परिष्कार-नशामुक्ति कार्यक्रम
- व्यक्तित्व परिष्कार युवा शिविर तथा नारी सशक्तीकरण शिविरों का आयोजन

**गुरूर, बालोद। छत्तीसगढ़**

गायत्री शक्तिपीठ गुरुर में गायत्री जयन्ती पर्व आगामी एक वर्ष में मिशन को नई ऊँचाइयों पर प्रतिष्ठित करने के शानदार संकल्पों के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 500 कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। उनके द्वारा वर्ष 2022-23 में सक्रियता के संकल्प लिए गए।

गायत्री जयन्ती पर्व 24 देव कन्याओं के माध्यम से सवालक्ष जप अनुष्ठान तथा अन्य साधकों द्वारा 24 घण्टे अखण्ड जप की साधनात्मक ऊर्जा के साथ मनाया गया। जिला समन्वयक श्री विशाल सिंह ने बताया कि इस अवसर पर मुख्य अतिथि विधायक श्रीमती संगीता सिन्हा ने वरिष्ठ गायत्री परिजनों को सम्मानित किया। बुद्ध पूर्णिमा के दिन 1400 घरों में यज्ञ सम्पन्न कराने वाले परिजन-पुरोहितों का उत्साहवर्धन भी किया गया।

# जनपदीय सम्मेलन में दिया तरुमित्र व जीवन मित्र सम्मान

**लखीमपुर खीरी। उत्तर प्रदेश**

उत्तर प्रदेश में 7,8,9 नवम्बर 2022 की तिथियों में श्रावस्ती में होने जा रहे प्रांतीय युग सृजेता समारोह के निमित्त जनपदीय युवा सम्मेलनों की शृंखला चल रही है। इसी क्रम में 23 मई को गायत्री शक्तिपीठ लखीमपुर में युवा सम्मेलन संपन्न हुआ। सम्मेलन में वृक्षगंगा मार्ग की विशेष उपलब्धि के लिए हरीतिमा युवा मंडल महतीपुरवा तथा ग्राम जागरण सेवा समिति खुर्रमनगर के युवा मंडल को तरुपुत्र सम्मान प्रदान किया गया। गायत्री परिवार लखनऊ की दिया टीम को आपातकालीन रक्तदान सेवाओं के लिए जीवनमित्र सम्मान से सम्मानित किया गया। सम्मेलन में निघासन, पलिया, ईसानगर, धौरहरा ब्लॉक से आए युवाओं ने विशेष रुचि ली।

# विदेश समाचार

## गायत्री जयंती पर 7 कुण्डीय यज्ञ

**पर्थ। ऑस्ट्रेलिया** : गायत्री जनसेवा केन्द्र पर्थ ने 25 जून 2022, शनिवार को गायत्री जयन्ती के उपलक्ष्य में 7 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया। लगभग साढ़े तीन घण्टे चले इस कार्यक्रम में 42 मुख्य यजमानों सहित कुल 180 श्रद्धालुओं ने भाग लेते हुए माँ गायत्री एवं गुरुसत्ता के श्रीचरणों में अपनी भावाञ्जलि अर्पित की।

इस यज्ञ ने न केवल श्रद्धालुओं की आस्था का पोषण किया, अपितु उनकी बौद्धिक जिज्ञासाओं को भी भली प्रकार तृप्त किया। व्यास मंच से वर्तमान जीवन में यज्ञ की आवश्यकता, यज्ञ विज्ञान और यज्ञ को व्यावहारिक जीवन में उतारने के सूत्रों की चर्चा हुई। श्रद्धालुओं की मानसिक भूख को तृप्त करने के लिए आयोजन स्थल पर बुक स्टॉल भी लगाया गया था, जो बहुत लोकप्रिय रहा। बड़ी मात्रा में लोगों ने अपनी रुचि का साहित्य खरीदा।

**यदि दुनिया की भूलें और उसके दोषों को दूर करना चाहते हो तो इस कार्य में माताओं को प्रवृत करो।**

# नवयुग की तरुणाई में ऋषि चिंतन एवं सनातन संस्कारों का संचार

## जम्मू-कश्मीर का प्रथम युवा शिविर

**सुन्दरबनी, राजौरी। ज. एवं क.**

जम्मू से 70 कि.मी. दूर सुदंरबनी तहसील में जम्मू-कश्मीर का प्रथम युवा शिविर सम्पन्न हुआ। दिनांक 5 से 7 जुलाई 22 की तिथियों में यह शिविर वहाँ नवनिर्मित गायत्री चरण पीठ में आयोजित हुआ। तीन जिले-जम्मू, राजौरी एवं रियासी के 13 से 22 वर्ष की उम्र वाले106 युवा-किशोरों ने इसमें भाग लिया। लगभग सभी नए युवकों तक मिशन का संदेश पहुँचाने में सफलता मिली। उद्घाटन सत्र में सुंदरबनी के एडीसी श्री विनोद कुमार बहल, जम्मू के न्यासी श्री राकेश शर्मा, श्री तरसेम नागर, श्री पठानिया एवं स्थानीय कार्यकर्ता भाई बहिन उपस्थित थे।

शान्तिकुञ्ज से श्री आशीष सिंह एवं श्री सदानंद आंबेकर पहुँचे थे। तीन दिवसीय सत्र में प्रतिभागी युवाओं को आत्म परिष्कार एवं राष्ट्र निर्माण की युगानुकूल विधियों को समझने का अवसर मिला। केन्द्रीय प्रतिनिधियों ने पूज्य गुरुदेव, परम वन्दनीया माताजी एवं युग निर्माण योजना को पावर पॉइण्ट के माध्यम से बड़ी कुशलता के साथ समझाया।

सर्वश्री रतन जी, संजय जी, डॉ. अंजना जी, अशोक कुमार, ओम जी, मोहन जी, सोनिया जी, गोपाल शर्मा, डॉ. आदर्श भारती, मदन शर्मा, सपना एवं स्थानीय कार्यकर्ता भाई-बहिनों का सक्रिय योगदान रहा।

**शानदार उपलब्धियाँ**

- पाँच युवा मंडलों का गठन हुआ।
- शिविर के अंत में अनेक प्रतिभागियों ने अपने अभिमत व्यक्त करते हुए कहा, ''हमें अपने जीवन के परिष्कार का मार्ग मिल गया है। हम इस पर अवश्य कार्य करेंगे।''

सुन्दरबनी में शिविर के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते एडीसी श्री विनोद कुमार बहल

## कन्या कौशल शिविरों से नारी संवदेना जगाई, सामाजिक सक्रियता बढ़ाई

**फरीदाबाद। हरियाणा**

गायत्री परिवार द्वारा मुकुल कॉन्वेंट सी.से. स्कूल सेक्टर-86 फरीदाबाद में 21 से 30 जून 2022 की तिथियों में दस दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। इसमें 12 से 17 वर्ष आयु वर्ग की विभिन्न स्कूलों से आई 36 देव कन्याओं ने भाग लिया। उन्हें प्रातः 4 बजे से रात्रि 9 बजे तक की शान्तिकुञ्ज जैसी दिनचर्या अपनाते हुए जीवन जीने की कला सिखाई गई। नित्य की दिनचर्या में योग, यज्ञ, बौद्धिक कक्षाएँ, खेलकूद, सेल्फ डिफेंस(जूडो-कराटे), गीत-संगीत का समावेश था।

शिविर बहुत उत्साहवर्धक एवं सफल रहा। सभी देव कन्याओं ने अगले शिविर में भागीदारी करने और गायत्री परिवार के कार्यक्रमों में सक्रिय भूमिका निभाने का उत्साह दर्शाया। समापन दिवस पर मुख्य अतिथि श्री प्रदीप राव, मुरादनगर ने सभी को प्रमाणपत्र, सत्साहित्य एवं स्कूल बैग भेंट किये। गायत्री परिवार की ओर से इस शिविर की सफलता में श्रीमती बाला चन्देला, मिथलेश गोयल, अर्चना विद्यार्थी, शशी शर्मा, श्री बलराज चन्देला, हरिओम वर्मा, अशोक कुमार, दयानन्द गुप्ता आदि का विशेष सहयोग रहा।

फरीदाबाद के शिविर में भाग लेकर गद्‍गद हो गई कन्याएँ

**घुमका, राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़**

गौरव ग्राम घुमका में तीन दिवसीय नारी सशक्तीकरण एवं कन्या कौशल शिविर आयोजित कर बहिनों को सफल जीवन जीने एवं अपने आपको सशक्त-सुरक्षित रखने का प्रशिक्षण दिया गया। इस शिविर को अनेक गणमान्य वक्ताओं ने सम्बोधित करते हुए समाज और राष्ट्र के नवनिर्माण में भागीदारी के लिए प्रेरित किया।

प्रमुख वक्ता अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राजनांदगाँव श्रीमती सुरेश चौबे ने महिलाओं को कानून, सुरक्षा, महिला हिंसा, यौन शोषण, बाल अपराध, दहेज आदि विषयों की जानकारी दी। श्रीमती फुलबासन यादव (पद्मश्री) एवं मधुलिका रामटेके (राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित) ने अपने जीवन के अनुभव साझा किए। डॉ. श्रीमती प्रज्ञा सक्सेना स्त्री रोग विशेषज्ञ (आयुर्वेद) ने बहिनों को स्वच्छता, स्वास्थ्य सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण सूत्र बताए।

10 बहिनों को सात दिवसीय कराटे प्रशिक्षण देकर उन्हें प्रशिक्षक के रूप में विकसित किया गया। वे जिले के स्कूलों में जाकर बच्चों को कराटे सिखायेंगी। महिला पुलिस टीम एवं चाइल्ड लाइन इंडिया फाउंडेशन राजनांदगाँव ने लावारिस बच्चों, अनाथों, बेघर बच्चों की मदद के बारे में बतलाया।

इस शिविर का आयोजन गायत्री परिवार की सक्रिय कार्यकर्त्ता बहिन श्रीमती शीला सोनी एवं ग्राम पंचायत घुमका के सहयोग से हुआ। उद्घाटन सत्र में डोंगरगढ़ विधायक श्री भुनेश्वर बघेल, हर्षिता स्वामी बघेल, जिला पंचायत, सरपंच घुमका श्रीमती फूलमती वर्मा पधारे। समापन अवसर पर गायत्री परिवार छत्तीसगढ़ की प्रभारी श्रीमती आदर्श वर्मा ने उपस्थित होकर बहिनों का उत्साहवर्धन किया।

### अनेक वरिष्ठ विशेषज्ञों से मिला बहुमूल्य शिक्षण

## साप्ताहिक कक्षाओं में तराशा जा रहा है व्यक्तित्व

**दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र**

'दिया' दिल्ली अपनी 'संभवम' योजना के अन्तर्गत युवाओं के व्यक्तित्व में छिपी संभावनाओं को अभिव्यक्त करने का प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। विगत कई वर्षों से चल रहे इन प्रयासों के अन्तर्गत कई प्रकार के साप्ताहिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जैसे वेब टॉक्स, मोटिवेशनल कक्षाएँ, वृक्षारोपण, बाल संस्कार शाला संचालन, विभिन्न प्रतियोगिताएँ आदि। श्री मनीष कुमार के नेतृत्व में किए जा रहे इन प्रयासों के अन्तर्गत अब तक लोक सेवा आयोग की प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हजारों युवाओं के जीवन को उत्कृष्टता की दिशा देने और समाज के निर्माण के लिए उन्हें प्रेरित करने में सफलता मिली है।

26 जून को आयोजित वेब टॉक 'उत्कर्ष' का विषय था 'एकाग्रता का रहस्य'। श्री मनीष जी ने प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए अत्यंत महत्वपूर्ण बिंदुओं की चर्चा की। उन्होंने कहा कि कुछ बड़ा (असाधारण) करने की इच्छा तो हर व्यक्ति में होती है, लेकिन उसके लिए जिस उच्च स्तर की एकाग्रता एवं क्षमता की आवश्यकता होती है, उसे प्रयत्नपूर्वक ही विकसित किया जा सकता है। इसके लिए उन्होंने नियमितता, आत्मानुशासन, अवरोधों को दूर करने के प्रयास, वर्तमान में जीने जैसे कई बिन्दुओं पर प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि एकाग्रता हर दिन के अभ्यास से आती हैं,इसके लिए हमारे भीतर या बाहर जो भी अवरोध हैं, उन्हें धीरे- धीरे समाप्त करने की आवश्यकता हैं।

मुखर्जी नगर में आयोजित होने वाले साप्ताहिक प्रेरक कार्यक्रम में उन्होंने महामानवों के जीवन से प्रेरणा लेकर व्यक्तित्व को निखारने सम्बन्धी मार्गदर्शन दिया।

### बाल संस्कार शाला ने बढ़ाया गौरव

चित्रकला प्रतियोगिता के 100 प्रतियोगियों में पहले 7 में से 6 बाल संस्कार शाला के छात्र रहे

प्रतियोगिता में भाग लेते और पुरस्कार ग्रहण करते बाल संस्कार शाला के बच्चे

टाटा पावर के द्वारा मलकागंज में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया था, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम बाल संस्कारशाला तिमारपुर के छः बच्चों ने भाग लिया। हर्ष की बात है कि इनमें क्रमशः बाल संस्कार शाला के सभी बच्चे प्रथम वरीयता प्राप्त 7 बच्चों में शामिल थे। प्रथम नेहा कुमारी, द्वितीय संजना कुमारी, चतुर्थ कशिश कुमारी, पंचम अभिषेक कुमार, छठा तरुण कल्याण और सातवाँ स्थान खुशबू कुमारी ने प्राप्त किया। प्रतियोगिता में लगभग 100 बच्चों ने भाग लिया था।

दिया, दिल्ली द्वारा नियमित बाल संस्कार शाला का संचालन किया जाता है। विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे नवयुवक इन कक्षाओं के लिए अपना समयदान देते हैं।

### गायत्री तपोभूमि, मथुरा में सम्पन्न ऐतिहासिक, अद्वितीय सम्मेलन

## प्राणवान कार्यकर्त्ता शिविर

**मथुरा। उत्तर प्रदेश**

गायत्री तपोभूमि, मथुरा में देशभर से आए प्राणवान कार्यकर्त्ताओं का एक अद्वितीय शिविर 16 एवं 17 जुलाई, 2022 में सम्पन्न हुआ। इस शिविर का उद्घाटन आदरणीय श्री मृत्युंजय शर्मा एवं वरिष्ठ परिजनों द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। शिविर में 1150 परिजनों ने भागीदारी की।

इतना बड़ा शिविर गायत्री तपोभूमि मथुरा में पहली बार सम्पन्न हुआ। इस शिविर ने अब तक के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। देश के विभिन्न अंचलों से श्रद्धालु-साधक भाई-बहिन पधारे। उनमें युग सृजन अभियान को गति देने का भरपूर उत्साह था। इसके साथ गायत्री मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए खूब श्रद्धा के साथ अनुदान दिया और भविष्य में जन-जन से धन संग्रह का संकल्प लिया। गायत्री तपोभूमि के वरिष्ठ परिजनों ने मंदिर निर्माण कार्यों की अब तक की प्रगति और भावी योजनाओं से परिजनों को अवगत कराया। उन्होंने सभी से इस कार्य में सहयोग करने का आह्वान किया।

## छत्तीसगढ़ में ऑनलाइन बाल संस्कार शाला का वार्षिक स्नेह सम्मेलन

दिनांक 12 एवं 13 जून को छत्तीसगढ़ में चल रही ऑनलाइन बाल संस्कार शाला का वार्षिक सम्मेलन सम्पन्न हुआ। छत्तीसगढ़ युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री ओम प्रकाश राठौर ने इस अवसर पर पिछले दो वर्षों से चलाई जा रही बाल संस्कार शाला की उपलब्धियाँ बताईं। उन्होंने कहा कि आपके प्रयास पूरे देश के लिए एक उदाहरण सिद्ध हुए हैं।

शान्तिकुञ्ज से जोन प्रभारी श्री सुखदेव निर्मलकर ने इसे सम्बोधित करते हुए बच्चों में मिशन के प्रति आस्था संवर्धन के लिए परम पूज्य गुरुदेव के जीवन के मार्मिक दृष्टांतों की सतत चर्चा करने की प्रेरणा दी। युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री के.पी. दुबे ने छत्तीसगढ़ आदर्श के रूप में राष्ट्रीय बाल संस्कार शाला का संचालन कैसे करे? इस संदर्भ में प्रभावशाली मार्गदर्शन दिया।

दो दिवसीय सम्मेलन में लगभग 80 विद्यार्थी एवं उनके अभिभावक शामिल हुए। दो माह तक चली प्रतियोगिताओं जैसे चित्रकला, लेखन, कबाड़ से जुगाड़, योग, कक्षा संचालन, वादन, गायन, भाषण, क्विज़ आदि के परिणामों की घोषणा की गई। सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया।

आचार्या सुश्री शांता साहू ने दिवंगत श्रीमती उषा किरण जी एवं श्रीमती कुंती जी से मिली प्रेरणा और मार्गदर्शन के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। कक्षा का संचालन श्री शक्ति राज, श्री राकेश जी, श्रीमती तुलिका पाठक एवं श्रीमती रामेश्वरी ने किया। सुश्री अमृता कार्यक्रम संयोजक थीं।

## प्रान्तीय किशोर संस्कार शाला का शुभारंभ

13 से 19 वर्ष की किशोरावस्था में हारमोन्स के परिवर्तन से बच्चों के विचार, भावनायें, स्वभाव, आदत आदि में भी तेजी से बदलाव प्रारंभ होता है। यही समय है जब बच्चों को उनके अच्छे-बुरे का बोध कराकर उनके जीवन को सही दिशा दी जानी चाहिए।

**ऑनलाइन होगा साप्ताहिक शिक्षण**

यह उत्थान-पतन का वह दोराहा है जहाँ सही मार्गदर्शन मिल जाए तो व्यक्ति महानता की ओर अग्रसर होता है और भटक जाए तो बुरी संगत में आकर पतन की ओर बढ़ता चला जाता है। हमें इस उम्र में किशोरों का मार्गदर्शन अवश्य करना चाहिए।

छत्तीसगढ़ में 'प्रांतीय ऑनलाइन किशोर संस्कार शाला' का शुभारंभ करते यह विचार केन्द्रीय जोनल समन्वयक डॉ. ओ.पी. शर्मा जी ने व्यक्त किये। छत्तीसगढ़ जोन समन्वयक श्री शुकदेव निर्मलकर ने बताया कि किशोर संस्कार शाला का संचालन साप्ताहिक होगा। डॉ. कुन्ती साहू मुख्य प्रशिक्षिका की जिम्मेदारी निभा रही हैं। उन्होंने बाल संस्कार शाला से निकले बच्चों को किशोर संस्कार शाला के साथ जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

**दस उपाध्यायों की अपेक्षा आचार्य का, सौ आचार्यों की अपेक्षा पिता का और सहस्त्र पिताओं की अपेक्षा माता का गौरव अधिक होता है।**

# शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का दक्षिण गुजरात का दो दिवसीय विहंगम प्रवास

## 10,000

दो दिवसीय प्रवास में लगभग 10,000 कार्यकर्त्ता एवं श्रद्धालुओं से सम्पर्क हुआ। प्रायः सभी को अपने-अपने समूहों में भेंटवार्ता का अवसर मिला।

## हम बदलेंगे, युग बदलेगा

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अपने संदेश में युगसंधि काल के विशिष्ट अवसर को पहचानने, भीतर के देवता को जगाने और भगवान के साथ साझेदारी का सौभाग्य प्राप्त करने का आह्वान किया। उन्होंने श्रद्धा, संवेदनाएँ और समर्पण भाव बढ़ाकर परम वंदनीया माताजी के जन्म शताब्दी वर्ष-2026 तक बड़े लक्ष्य प्राप्त करने की प्रेरणा कार्यकर्त्ताओं को दी। उन्होंने कहा कि हमें परम पूज्य गुरुदेव द्वारा दिए गए ''हम बदलेंगे, युग बदलेगा'' के सूत्र को अपने जीवन में उतारना होगा।

## जहाँ चरण पड़े माताजी के

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी अपने वडोदरा के प्रस्तुत प्रवास में उन केन्द्रों (इन्द्रपुरी, वाघोड़िया और कायावरोहण) पर नमन-वन्दन करने पहुँचे, जहाँ अश्वमेध यज्ञ वडोदरा के समय परम वंदनीया माताजी गई थीं।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी 5 एवं 6 जुलाई को दक्षिण गुजरात के प्रवास पर पहुँचे। इन दो दिनों में वे वडोदरा, नवसारी, नर्मदा, सूरत और भरूच के अनेक प्रज्ञा केन्द्रों पर पहुँचे। उनका सान्निध्य पाकर एवं संदेश सुनकर हजारों कार्यकर्त्ता गद्‌गद हो गए। उनकी आस्था और सक्रियता को बल मिला।

### हॉस्पिटल का उद्‌घाटन, सेवाधर्म की प्रेरणा

5 जुलाई 2022 को प्रवास का शुभारम्भ वडोदरा के मांजलपुर विस्तार में डॉ. नीरज शाह एवं डॉ. राखी नीरज शाह के द्वारा निर्मित देवपुष्प मल्टी स्पेश्यालिटी हॉस्पिटल के उद्‌घाटन के साथ हुआ। इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम में डॉक्टरों की एक बड़ी टीम, नर्सिंग स्टाफ एवं टेक्नीशियन उपस्थित रहे। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि चिकित्सा का क्षेत्र सेवा का क्षेत्र है। जब इसके साथ लोकमंगल की भावनाएँ जुड़ जाती हैं तो ईश्वर की उच्च कोटि की भक्ति हो जाती है। उन्होंने सभी से व्यक्तिगत भेंट कर उनकी कुशलक्षेम जानी।

हॉस्पिटल केउद्‌घाटन के पश्चात्‌ वे समीप के प्रज्ञा केन्द्र पहुँचे, परिजनों से भेंट की।

### गुरु-शिष्य परम्परा का मर्म समझाया

राजपूत समाज की वाडी में एक आम सभा हुई, 1200 श्रद्धालु परिजनों की उपस्थिति रही। गुरुपूर्णिमा पर्व की पूर्व वेला में हुआ यह कार्यक्रम कार्यकर्त्ताओं में अपनी गुरुसत्ता और मिशन के प्रति अनुशासन-समर्पण के भावों को पोषण देने वाला था। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने गुरु-शिष्य परम्परा के उच्च आदर्शों को प्रस्तुत करने वाले दृष्टांत सुनाकर श्रोताओं को भावविभोर कर दिया।

वडोदरा : आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी राजपूत समाज की वाड़ी और शक्तिपीठ खटम्बा में आयोजित विशाल जनसभाओं को सम्बोधित करते हुए

**गायत्री शक्तिपीठ खटम्बा** में भी ऐसी ही एक विशाल जनसभा हुई, जिसमें कार्यकर्त्ता स्तर के लगभग 800 लोगों ने भाग लिया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने अपने संदेश में परम्परागत सोच से ऊपर उठकर वर्तमान समय की विशेषता को पहचानने और सुरदुर्लभ मानव जीवन को सफल बनाने की प्रेरणा दी।

**भरूच :** 6 जुलाई को पहला कार्यक्रम गायत्री शक्तिपीठ भरूच में संगोष्ठी का था। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी से सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं ने अलग-अलग समूहों में भेंटवार्ता की।

**नवसारी :** नवसारी में कार्यकर्त्ता सम्मेलन का आयोजन श्रीराम मंदिर सभागार में हुआ। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने अपने उद्‌बोधन में दक्षिण गुजरात में मिशन के विस्तार के लिए अथक परिश्रम कर रहे कार्यकर्त्ताओं की पीठ थपथपाते हुए परोक्ष रूप से उनकी सेवा-साधना का सम्मान किया। उनके संदेश ने उपस्थित लगभग 700 परिजनों को युग निर्माणी आस्था से सराबोर कर दिया। इस कार्यक्रम में केन्द्रीय प्रतिनिधि ने स्थानीय वरिष्ठ परिजनों को सम्मानित किया।

नवसारी में बड़ी संख्या में लोगों के यहाँ देवस्थापना-गंगाजली स्थापना की गई। डॉ. चिन्मय जी आँखों के एक अस्पताल में देवस्थापना कराने भी पहुँचे। तत्पश्चात्‌ गायत्री शक्तिपीठ पर दर्शन-प्रणाम किया। एक विद्यालय में भी गए, जिसे केन्द्र बनाकर युवाओं को विकसित करने की प्रेरणा दी। श्री हितेश भाई देसाई, श्री कान्तिभाई पटेल, श्री मनीषभाई पटेल, नैनाबेन पटेल, ज्योतिबेन नायक नवसारी के कार्यक्रमों की सफलता के प्रमुख शिल्पी थे।

### सूरत जिले में हुई कई सभाएँ

6 जुलाई को ही नवसारी के बाद सूरत जिले के कई प्रज्ञा केन्द्रों पर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी गए, कार्यकर्त्ताओं में नवचेतना का संचार किया।

**सरभोण :** सूरत जिले का प्रथम कार्यक्रम गायत्री चेतना केन्द्र सरभोण पर दर्शन प्रणाम, भेंट परामर्श का था।

**बारडोली :** गायत्री चेतना केन्द्र बारडोली पहुँचे, जहाँ 300 परिजनों की संगोष्ठी को उन्होंने सम्बोधित किया।

**जे.पी. नगर :** गायत्री मंदिर जे.पी. नगर पहुँचकर दर्शन-प्रणाम किया, कार्यकर्त्ताओं की संक्षिप्त गोष्ठी हुई।

### गणमान्यों के घर देवस्थापनाएँ

कतारगाम में हीरा व्यापारी जोधाली ब्रदर्स के घर देवस्थापना के साथ युगतीर्थ की दिव्य चेतना का अभिसिंचन किया। एक और विख्यात्‌ उद्योगपति हीरा व्यापारी श्री गोविंद भाई ढोलकिया एवं रामकृष्ण एक्सपोर्ट के मालिक श्री लालजी भाई के आवास पर देवस्थापना के लिए आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी पहुँचे थे।

**कतारगाम, सूरत में विशाल जनसभा :** नगरपालिका के कम्यूनिटी हॉल में विशाल सम्मेलन रखा गया था। इसमें लगभग 1400 लोगों की भागीदारी रही।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के प्रवास में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि गुजरात जोन प्रभारी सर्वश्री उदयकिशोर मिश्रा, दयानन्द शिववंशी, ज्वलंत भावसार तथा वडोदरा उपजोन समन्वयक श्री राजेश भावसार, अश्विन भाई जानी, कनुभाई पटेल, हिरेन रावल, जयेश बारोट, रमेश जोशी, युवा समन्वयक श्री किरीट सोनी, धवल राजपुरोहित, दिगंत भाई जानी, पूर्वांग, देवाशीष, मनोज पाटिल ने सहयोगी की भूमिका निभाते हुए पूरे क्षेत्र में संगठन को सशक्त बनाने और सक्रियता बढ़ाने के लिए समीक्षात्मक सहयोग दिया।

नवसारी की विशाल जनसभा

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी बारडोली की जनसभा को सम्बोधित करते हुए

कतारगाम के सभागार में आयोजित विशाल पारिवारिक सम्मेलन

# देसंविवि में 'मनोविकार एवं उनके उपचार' पर मंथन

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रतिकुलपति देसंविवि. के संग कार्यशाला के प्रतिभागीगण, दायें- अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका एवं ई-प्रोसीडिंग्स का विमोचन

## देव संस्कृति विश्वविद्यालय में कार्यशाला

9, 10 एवं 11 जुलाई की तिथियों में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक अध्यात्मवाद विभाग द्वारा 'मानसिक स्वास्थ्य में आध्यात्मिकता, आयुर्वेद और वैकल्पिक उपचारों की भूमिका' विषय पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कुलपति श्री शरद पारधी ने इसके समापन सत्र को सम्बोधित किया। उन्होंने मानसिक रोगों से बचने के व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक उपायों की उदाहरणों के साथ चर्चा की। उन्होंने पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा लिखी गई वैज्ञानिक अध्यात्मवाद से संबंधित विभिन्न पुस्तकों को मनोविकारों से बचाव एवं उनके उपचार का अत्यंत प्रभावशाली उपाय बताया।

इससे पूर्व प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि मानव मन में निहित असंतोष, ईर्ष्या, क्रोध जैसी दुर्भावनाएँ मनोविकारों की जड़ हैं। आत्मवादी जीवन जीते हुए इन विकारों का कुशलतापूर्वक प्रबन्धन किया जा सकता है।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं मंचासीन गणमान्यों ने इस अवसर पर 'मानसिक स्वास्थ्य में आध्यात्मिकता, आयुर्वेद और वैकल्पिक उपचारों की भूमिका' विषय पर अंतर्विषयक अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका और ई-प्रोसीडिंग्स का विमोचन किया। तीन दिन चली विचार मंथन में भारत के 19 राज्यों से आए लगभग 100 शोधार्थियों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

कार्यशाला में विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता देसंविवि के डॉ. पीयूष त्रिवेदी, डॉ. अमृत गुरवेंद्र, डॉ. सुरेश बर्णवाल, डॉ. आरती ने की। इस दौरान डॉ. उर्मिला श्रीवास्तव, डॉ. बिजॉय राज, डॉ. विवेक महेश्वरी, डॉ. चिराग अंधारिया, डॉ. प्रेरणा पुरी, डॉ. महेश भट्ट एवं डॉ. राम प्रकाश शर्मा सहित देसंविवि के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

## अखिल विश्व गायत्री परिवार के लिए

## सोशल मीडिया पॉलिसी

यह सोशल मीडिया का युग है। तद्‌नुसार शान्तिकुञ्ज द्वारा इसका सदुपयोग करते हुए विचार क्रान्ति के प्रभावशाली प्रयास किए जा रहे हैं। इसके साथ ही विभिन्न गायत्री परिवार के विभिन्न संगठन/शक्तिपीठ/शाखाओं ने भी विभिन्न एप्लिकेशन्स पर पेज और चैनल बनाए गए हैं। इन्हें देखते हुए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर अखिल विश्व गायत्री परिवार की प्रस्तुतियाँ गरिमापूर्ण, सुव्यवस्थित, प्रामाणिक और प्रभावशाली रहे, इसके लिए गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज द्वारा 'सोशल मीडिया नीति-नियमावली (पॉलिसी)' निर्धारित की गई है। सोशल मीडिया पॉलिसी का प्रबन्धन एवं संचालन इलैक्ट्रॉनिक मीडिया डिवीजन (ई.एम.डी.), शान्तिकुञ्ज द्वारा होगा।

इस नीति-निर्धारण से सम्बन्धित विस्तृत नियमावली का एक पत्र शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक महोदय द्वारा जारी किया गया है। जो संगठन, शाखा, परिजन सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं, उनसे निवेदन है कि निम्न लिंक से पत्र को डाउनलोड कर उन नियम-निर्धारणों को निष्ठापूर्वक कड़ाई के साथ पालन करें।

**लिंक : http://shorturl.at/otCIM**

**नोट :** हमारी सक्रियता परम पूज्य गुरुदेव द्वारा घोषित सत्संकल्प-''हम राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रान्त, सम्प्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।'' को ध्यान में रखकर ही हो। इस मान्यता के विपरीत किसी भी प्रकार की कोई प्रतिकूल टिप्पणी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से न हो, इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाना आवश्यक है।

**निवेदक : व्यवस्थापक, शान्तिकुञ्ज**

# गुरुपूर्णिमा ज्ञान को धारण करने का पर्व है

## पदार्थ के विज्ञान से बहुत ऊँचा है आध्यात्मिक ज्ञान। - श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी

"ज्ञान की दो धाराएँ हैं। एक पदार्थ के ज्ञान की धारा और दूसरी प्रज्ञा-श्रद्धा की धारा। एक धारा मस्तिष्क की और दूसरी हृदय की है। दोनों का समन्वय समय की माँग है। भारत को विश्व गुरु बनाने के लिए मस्तिष्क की प्रखरता चाहिए और हृदय की पवित्रता भी चाहिए। यही वैज्ञानिक अध्यात्मवाद है, जिसका प्रतिपादन परम पूज्य गुरुदेव ने किया है।

हमारा समाज ज्ञानमूलक है, हमारी संस्कृति ज्ञानमूलक है। हम गुरु परम्परा के अनुयायी हैं, ऋषियों की संतान हैं। हमने न तो अध्यात्म को कम माना, न ही विज्ञान को कम माना है। पदार्थ के विज्ञान से बहुत ऊँचा है आध्यात्मिक ज्ञान। जब आइंस्टीन मरने वाले थे तब उन्हें विशिष्ट अनुभूति होती थी। वे कहते थे, ''संसार मिट रहा है, परिवर्तित हो रहा है।'' वे कहते थे-''मैंने जो कुछ पाया, जाना वह कुछ था ही नहीं, कहीं मैं आध्यात्मिक तो नहीं हो रहा हूँ, जो ऐसी रहस्यमयी बातें करने लगा हूँ।''

गुरुपूर्णिमा पर्व ज्ञान के अहसास का, ज्ञान की धारणा का पर्व है। हमें पूज्य गुरुदेव के विचारों को, उनके वैज्ञानिक अध्यात्मवाद को घर-घर पहुँचाना है। परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य जीवन का आमूलचूल परिवर्तन कर देने की सामर्थ्य रखता है।"

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज में 13 जुलाई को गुरुपूर्णिमा पर्व पूजन के उपरान्त पर्व-संदेश देते हुए उपरोक्त बातें कहीं। श्रद्धेया शैल जीजी ने भी पर्व संदेश देते हुए परम पूज्य गुरुदेव के त्याग, तप, अनुदान और उनके महान जीवन लक्ष्य का स्मरण कराया।

इस वर्ष गुरुपर्व जन्म शताब्दी वर्ष-2026 के लक्ष्यबोध तथा नारी सशक्तीकरण वर्ष-2022-23 की सक्रियता के उल्लास की दिव्य अनुभूतियों के साथ मनाया गया। 11 से 13 जुलाई तक भव्य जनजागरण शोभायात्रा, 24 घण्टे का सामूहिक अखण्ड जप, यज्ञ, संस्कार, दीपयज्ञ आदि परम्परागत कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

**शोभायात्रा** : तीन दिवसीय समारोह का शुभारम्भ 11 जुलाई को प्रातः शोभायात्रा से हुआ, जो शान्तिकुञ्ज से आरम्भ होकर हरिपुर कलाँ एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिसर तक नवचेतना जागरण का उद्घोष करते हुए शान्तिकुञ्ज लौटी। गुरुस्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' पर आरती, पूजन, वंदन और उद्घोष के साथ शोभायात्रा का समापन हुआ। देश-विदेश से आए सैकड़ों श्रद्धालुओं ने इस यात्रा में भाग लेते हुए परम पूज्य गुरुदेव के सपनों को साकार करने में अपने समय, प्रभाव, ज्ञान एवं धन का एक अंश लगाने के संकल्प लिए।

**भाषण प्रतियोगिता** : 11 जुलाई की अपराह्नकालीन सभा में परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी के जीवन दर्शन पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के अनेक विद्यार्थियों ने भाग लेकर गुरुदेव-माताजी के श्रीचरणों में अपनी भावाञ्जलि व्यक्त की।

हरीपुर कलाँ की गलियों से गुजरती शोभायात्रा और श्रद्धेया जीजी के श्रीमुख से गायत्री महामंत्र की दीक्षा लेते श्रद्धालु

**विशिष्ट संदेश** : गुरुपूर्णिमा पर्व के उपलक्ष्य में 11 जुलाई की सायं आदरणीय श्री शिवप्रसाद मिश्रा जी का अत्यंत श्रद्धापरक विशेष उद्बोधन हुआ। उन्होंने कहा कि शिष्य श्रद्धा, समर्पण के साथ जब अपने सद्गुरु से मिलता है, तब सद्गुरुदेव अपने तप और पुण्य का एक अंश शिष्य के व्यक्तित्व में आरोपित कर उसके चहुमुखी विकास का मार्ग खोल देते हैं। अपने कई संस्मरणों के माध्यम से श्रोताओं के हृदय में श्रद्धा-भावना बढ़ाते हुए उन्होंने पूज्य गुरुदेव के जीवन पथ एवं जीवन सूत्रों को अपनाने की प्रेरणा दी।

गुरुपर्व की पूर्व संध्या पर डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का 'नारी सशक्तीकरण वर्ष' के संदर्भ में विशेष उद्बोधन हुआ। इससे पूर्व अपराह्नकालीन सभा में श्री केदार प्रसाद दुबे ने 'जन्म शताब्दी वर्ष एवं हमारे दायित्व, सप्त आन्दोलन एवं संकल्प' विषय पर संदेश दिया। उन्होंने समय की माँग और चुनौतियों की चर्चा करते हुए युगसृजेताओं को सृजनात्मक गतिविधियों में प्रवृत्त करने सम्बन्धी मार्गदर्शन दिया।

**दीपयज्ञ** : तीन दिवसीय समारोह का समापन दीपयज्ञ से हुआ। ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली ने इसका संचालन करते हुए अपने जीवन को ही यज्ञमय बनाते हुए देवत्व के विकास के लिए सतत प्रयत्नशील रहने और समाज के उत्थान के लिए समर्पित होने के संकल्प दिलाए।

दीपज्योति से जगमगाते गुरुस्मारक

## लोकमंगल के लिए समर्पित जीवन ही सार्थक

**- श्रद्धेया शैल जीजी**

मानव मन की गहराइयों को समझने वाली कोई शक्ति है-वह है गुरु। अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाए वह गुरु। वह अपने शिष्य के भलाई के लिए सब कुछ करता है, जैसे ऋषि आश्वलायन ने दस्यु बन गए अपने शिष्य देवव्रत को सन्मार्ग दिखाने के लिए अपनी जान की परवाह नहीं की और अंधेरी रात में उसकी तलवार का वार सहकर भी उसे अपनी भूल का अहसास कराया था।

जीवन तो सामान्य पशु भी जीते हैं, किन्तु जो सार्थक जीवन जीते हैं वे लोकमंगल के लिए समर्पित हो जाते हैं। परम पूज्य गुरुदेव-परम वंदनीया माताजी ने अपना सर्वस्व समाज के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया था। उनके शिष्यों को भी उसी पुण्य परम्परा का अनुसरण करना चाहिए।

गुरुपूर्णिमा का दिन त्याग और बलिदान का दिन है, श्रद्धा और समर्पण का दिन है। गुरु का त्याग और शिष्य का समर्पण बड़े-बड़े चमत्कार कर देता है। भगवान राम की रामायण जब तक गाई जाती रहेगी, उनके रीछ-वानर भी याद किए जाएँगे। नवयुग के श्रीराम को जब भी कोई याद करेगा, तो गुरु की नवसृजन वाहिनी को जरूर याद करेगा।

परम पूज्य गुरुदेव ने अपने बच्चों से दस हजार हीरों का हार माँगा था। हे गुरुदेव! हम सबकी कामना और भावना यही रहे कि हम उनमें सबसे पहले हीरे हों।

## मानवता का उत्कर्ष नारी सशक्तीकरण से ही संभव

**आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने पूर्व संध्या पर दिए अपने उद्बोधन में कहा :-**

युग निर्माण का उद्घोष मनुष्य में देवत्व के जागरण हेतु भगवान का संदेश है। ईश चेतना ने इस संदेश को जन-जन तक पहुँचाने के लिए पूज्य गुरुदेव का आह्वान किया है। इसका एक महत्त्वपूर्ण अध्याय नारी सशक्तीकरण का है।

समस्याओं की जड़ लोगों के मन में आई संकीर्णता में है। लोग यही सोचते हैं कि मैं रहूँ, चाहे दूसरा रहे या ना रहे। दुनियाँ की दूरियाँ घट रही हैं, लेकिन दिलों की दूरियाँ बढ़ती जा रही हैं। भावनाओं की दृष्टि से इंसान दरिद्र होता चला जा रहा है, इसीलिए सारी समस्याएँ खड़ी हुई हैं।

संवेदनाओं के जागरण से ही हर समस्या का समाधान संभव है। इंसान के दिल के जख्मों को भर दिये जायें तो शैतान भी इंसान बनता चला जाता है। हमारा अभियान यही है कि व्यक्ति का चिंतन उत्कृष्ट हो, उसकी भावनाएँ, उसकी संवेदनाएँ जागें। संवेदनाओं को जगाने का काम नारी शक्ति बेहतर ढंग से कर सकती है। यह देश गंगा, गीता, गायत्री, गार्गी, घोषा, अपाला, लक्ष्मीबाई, दुर्गाबाई, अहिल्याबाई का है। यदि भारत का जागरण संभव है तो वह नारियों के जागरण से संभव है। मानवता का उत्कर्ष नारी सशक्तीकरण से ही संभव होगा।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी पूर्व संध्या पर विशेष संदेश देते हुए

## श्रद्धेया शैल जीजी का चयन वैश्विक स्तर के प्रियदर्शनी अकादमी पुरस्कार के लिए हुआ

**परम वंदनीया माताजी के जन्म दिवस 19 सितम्बर 2022 को मिलेगा यह पुरस्कार**

गुरुपूर्णिमा की पूर्व संध्या पर दिए उद्बोधन में नारी सशक्तीकरण वर्ष के विलक्षण संयोग पर अपनी हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा - *''हमारा सौभाग्य है कि अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए वैश्विक स्तर पर दिया जाने वाला प्रियदर्शनी अकादमी पुरस्कार के लिए श्रद्धेया शैल जीजी का चयन हुआ है। यह अद्भुत संयोग है कि नारी सशक्तीकरण के लिए समर्पित श्रद्धेया जीजी को यह पुरस्कार गायत्री परिवार द्वारा घोषित नारी सशक्तीकरण वर्ष में दिया जा रहा है और वह भी नारी जागरण की प्रणेता परम वन्दनीया माताजी के जन्म दिवस-19 सितम्बर 2022 के दिन।''*

## जन्मभूमि आँवलखेड़ा में साधना शिविर

परम पूज्य गुरुदेव की जन्मभूमि आँवलखेड़ा के दिव्य वातावरण में विगत कई वर्षों से विशेष साधना शिविर अनवरत चल रहे हैं। यहाँ के प्राकृतिक वातावरण में जप-तप की विशेष सुविधा है। अब तक हजारों साधक इनमें भाग लेकर आत्मोत्कर्ष की साधना कर चुके हैं।

**सावित्री साधना शिविर** - प्रत्येक माह की 1 से 5 तारीख के बीच
**संजीवनी साधना शिविर** - प्रत्येक माह ही 11 से 19 तक की तारीखों में
**एक मासीय चान्द्रायण साधना शिविर** - फाल्गुन पूर्णिमा से चैत्र पूर्णिमा तक, आषाढ़ पूर्णिमा से श्रावण पूर्णिमा तक तथा भाद्रपद पूर्णिमा से आश्विन पूर्णिमा तक

शिविरों की नियमावली, पंजीयन एवं अन्य जानकारियों के लिए सम्पर्क कीजिए -

फोन नम्बर
70372 22858
70781 79198

## विशिष्ट झलकियाँ

**तीन कार्यक्रम :-**

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने गुरुपर्व से निम्न कार्यक्रम आरम्भ करने का आह्वान किया :-

- **नारी सशक्तीकरण**
- **अखण्ड ज्योति पाठक बढ़ाना**
- **चान्द्रायण व्रत साधना** गुरुपूर्णिमा से रक्षाबंधन तक

**साहित्य विमोचन :-**

- गायत्री महाविज्ञान (ऑडियो बुक)
- प्रज्ञागीत एमपी-3 (गुरुपरक)
- स्वर्ण जयन्ती वर्ष डॉक्यूमेण्ट्री
  - शान्तिकुञ्ज वीडियो प्रज्ञागीत यूट्यूब चैनल
  - शान्तिकुञ्ज वीडियो (English)
- टेबल कैलेण्डर (प.वं. माताजी की जन्मशताब्दी के संदर्भ में)

**पुस्तकें -**

- पूज्य गुरुदेव, जैसा मैंने देखा-समझा - परम वंदनीया माताजी
- परम वंदनीया माताजी की अमृतवाणी
- विविधदेवानां विविधा गायत्री
- सम्पूर्ण योग वासिष्ठ कथासार
- नारी सशक्तीकरण मार्गदर्शिका
- देव संस्कृति संजीवनी
- यज्ञ ज्योति (देसंविवि की पत्रिका)
- शान्तिकुञ्ज पंचांग-2023
- छत्तीसगढ़ी हाना शब्दकोश (कहावत, लोकोक्ति, मुहावरा शब्दकोश)

**वृक्षारोपण :-**

श्रद्धेय डॉ. साहब एवं श्रद्धेया जीजी ने पाँच देववृक्षों का पूजन करने के साथ जन्माष्टमी तक चलने वाले वृक्षारोपण अभियान का शुभारम्भ किया।

**संस्कार :-**

श्रद्धेय द्वय के श्रीमुख से गुरुपर्व पर लगभग 800 लोगों ने गुरुदीक्षा ली। युगतीर्थ में संस्कारों की लोकप्रियता के अनुरूप सैकड़ों की संख्या में मुण्डन, उपनयन, विद्यारम्भ, विवाह आदि संस्कार हुए।

**भजन संध्या :-**

गुरुपर्व के उपलक्ष्य में 11 जुलाई की सायंकालीन सत्संग सभा में भजन संध्या का आयोजन कर गुरुओं की महानता को याद किया गया, वहीं शिष्य के समर्पण भाव को भी रेखांकित किया गया। देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्री विद्यापीठ व शांतिकुंज के युगगायकों ने भक्तिभाव में डुबा दिया।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 27.7.2022
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23